# अमृत संदेश

# श्री साईं महिमा

त्रेता राम कहाये जो द्वापर बने गोपाल।
सो हमरी रक्षा करें श्री साईं नाथ कृपाल।।
दीना नाथ दया निधे भक्तों के प्रतिपाल।
हमरे हृदय सो बसें श्री समरथ साईं दयाल।।
त्रेता राम कहाये जो ...

हैं अनाथ के नाथ जो जग के पालन हार।
हमरे हैं वो अपने श्री बाबा अपरम्पार।।
त्रेता राम कहाये जो ...

अन्तरयामी अजर अमर अशरन शरन भगवान।
हमरे रखवारे वही श्री समरथ साईं सुजान।।
त्रेता राम कहाये जो ...

सुर नर मुनि जाको भजें पार न पावे को।
मेरे तो प्रभु हैं वही श्री साईं कहावें जो।।
त्रेता राम कहाये जो ...

*''ॐ श्री साईं''*

# समर्पण

## ।। गुरुदेव आनंद, गुरुदेव अनंत ।।

*सत्गुरु परसुख के लिए जीते हैं। उन्हें अपने लिए कुछ नहीं चाहिए होता। उनका एकमात्र उद्देश्य होता है जगत् को सच्चा मार्ग दिखाना, उस पर चलने के लिए जीवों को प्रेरित करना। सत्गुरु उपकृत करते हैं जन-जन को बदले में उन्हें किसी से भी तिल मात्र की आशा नहीं होती। वे देना-देना जानते हैं लेने की तो उनकी फितरत ही नहीं होती। हमें गर्व है हमारे प्राणप्यारे गुरुदेव श्री आनंद साईं जी पर जिनके हम बच्चे हैं, शिष्य हैं, जिन्होंने हमें दिया ही दिया कभी भी एक दमड़ी भी हमसे नहीं लिया। ऐसे पर्म प्रिय, पर्म पूज्य गुरुदेव को हम शत-शत नमन करते हैं। हम पर उनके इतने उपकार हैं कि हम ता ज़िंदगी भी लगे रहें तो उन उपकारों का एक हिस्सा भी उतार नहीं सकते। अध्यातम में तो हमें आगे बढ़ाया ही साथ ही साथ हमारे संसारिक जीवन को भी संवारा। धन्य धन्य गुरुदेव कह कर शब्दों का बहाव रुक जाता है। आज शरीर में न रहकर भी वे हमें हाथ पकड़कर मार्गदर्शन कर रहे हैं। हमारी संसारिक व अध्यात्मिक अपदाओं से बचाते चले जा रहे हैं। सत्गुरु तेरी जै जैकार। सत्गुरु तेरी जै जैकार।*

*प्राणप्यारे सत्गुरु द्वारा रचित श्री साईं गीता के शुरु में ही बाबा साईंनाथ फरमाते हैं :*

**कर्म फल दायक नाम मेरा मैं कर्मों के फल देता हूँ।**
**जा की साची करनी हो मैं उसको अपना लेता हूँ।।**

*मूलतः ईश्वर कर्म फल दायक हैं। हमारे कर्मों के अनुसार ही हमें फल दिया जाता है। जैसी करनी वैसी भरनी। प्रस्तुत दोहे की प्रथम पंक्ति में बाबा अपना*

*एक न्यायधीश का रूप बता रहे हैं। उन्हें कोई चश्मदीद गवाहों की जरुरत नहीं। हमारे हर कर्म का हिसाब, हर कर्म का ब्योरा उनके पास रहता है। दूसरी पंक्ति में वे बताते हैं कि जिसकी करनी सच है, जो सत् कर्म करता है उसको वो अपना लेते हैं, अपना बना लेते हैं। बाबा वैसे न्यायधीश हैं जैसे कर्म करोगे, वैसा न्याय पाओगे लेकिन जो सत् कर्म करते हैं उनको वे अपना लेते हैं अपना बच्चा बना लेते हैं उनके साथ माँ के जैसा व्यवहार होता है। ऐसे जन के लिए वे साईं माँ हैं। बाबा आगे कहते हैं :*

**साची भक्ति साची करनी दोनों में कुछ भेद नहीं।**
**जिस जा साचा प्रेम नहीं उल्टी करनी जान वहीं।।**

*निष्काम भक्ति ही सच्ची भक्ति है। भक्ति वो, जो भक्ति की खातिर हो, प्रेम वो, जो प्रेम की खातिर हो। कुछ चाहना रख कर की गई भक्ति थोथी है, निरस है। बाबा फरमा रहे हैं सच्ची भक्ति, सत् कर्म सच्चा प्यार इनमें कोई फर्क नहीं है। जहाँ सच्चा प्रेम नहीं है वहाँ सच्चे कर्म कैसे हो सकते हैं भला। उल्टे कर्म, गलत कर्म वहीं होते हैं जहाँ पर प्रेम सच्चा नहीं, जहाँ पर भक्ति कुछ चाहना रख कर की जाती है। भक्ति वो, प्यार वो, जिसमें कोई खुदगर्जी न हो। बेगर्ज प्रेम है तो सब कुछ है।*

**शरण मेरी जो आ जाए उसके दुख हर लेता हूँ।**
**शरणागत् को घट भीतर से सत् बुद्धि मैं देता हूँ।।**

*दोहा ब्यान करता है कि जो निर्वासना होकर ईश्वर की चरण-शरण में जाता है ईश्वर उसका पूरा ध्यान खुद-बखुद रखते हैं। पूर्ण शरणागति मतलब हर हाल में, हर स्थिति में तू ही तू, मेरे बाबा तू ही तू। जो जीव बाबा को शरणागत हो जाता है बाबा कहते हैं मैं उसके सारे दुख, सारे कष्ट स्वाहा कर देता हूँ। यहाँ तक ही नहीं बाबा ऐसे जीव को सत् बुद्धि देते हैं, गलत कर्मों से बचाते हैं, मार्गदर्शन करते हैं। मात्र, जीव की पूर्ण शरणागति होनी चाहिए, जीव पूर्ण रूप से शरणागत होना चाहिए। शरणागत जीव बाबा को अति प्रिय है।*

**मैं क्या कहूँ मैं सदा-सदा निज भक्तों का रखवारा हूँ।**
**मैं मात पिता हूँ भक्तों का मैं उनका पालनहारा हूँ।।**

*अपने सच्चे भक्तों से बाबा को कितना स्नेह है। कितने सुंदर शब्दों में बताया है प्यारे साईं ने। सच्चे भगत कौन? सच्चे भगत वो जो बाबा से बाबा की ही चाहना करते हैं, जिन्हें बाबा के सिवा कुछ और चाहिए ही नहीं होता है। बाबा के श्री चरणों में जिनका दृढ़ विश्वास होता है। जो बाबा के दिवाने होते हैं, ऐसे दिवाने कि ज़ुबां पर अपने प्यारे बाबा का नाम और उनके प्रेम में विभोर होकर नैनों में प्रेम भरे आँसू छलकते रहते हैं। जिसने अपना सर्वस्व बाबा पर न्योछावर कर दिया है। ऐसे अपने सच्चे भक्त की रक्षा बाबा सदा-सर्वदा करते हैं। भक्त को पुकारना भी नहीं पड़ता, गुहार भी लगानी नहीं पड़ती, बाबा स्वयं ही ऐसे भक्त के अंग-संग रहते हैं। उसे हर छोटी बड़ी मुसीबतों से बचाते रहते हैं। उसका लालन-पालन करते हैं। जैसे माता-पिता अपने बच्चों को पालते-पोसते हैं बाबा ठीक उसी तरह अपने सच्चे प्रेमी का ख्याल रखते हैं। ऐसे निष्कामी भक्त को वै अपना निजी भक्त कहते हैं। यहाँ यह बात भी स्पष्ट करना जरुरी है कि जीव के अन्दर सच्ची भक्ति भी बाबा की दया दृष्टि से उत्पन्न होती है। आज लाखों-लाख लोग मुरादें लेकर शिर्डी जाते हैं बाबा उनकी हर मुराद पुरी करते हैं लेकिन उनकी नज़र उस जन सैलाब में अपने निज भक्त पर टिकी रहती है। ऐसा भगत जो बाबा से केवल बाबा को पाने की मुराद लेकर आया हो। साईं माँ अपने ऐसे बच्चे पर वारी जाती है। अंतिम पंक्ति में बाबा फरमाते हैं :*

**भक्त मुझे हैं अति प्रिय मैं उनका सदा सहाय्यक हूँ।**
**मैं रक्षा करता बच्चों की उनके जीवन का नायक हूँ।।**

*अपने भक्तों के प्रति प्रेम छलकता हैं इस दोहे में। मेरे भक्त मुझे बहुत ही प्यारे हैं। कितने? भक्तों के प्रेम में विभोर होकर बाबा कहते हैं मैं उनका सहाय्यक हूँ। संसारिक हो या अध्यात्मिक हर अडचन में, हर दुविधा में बाबा अपने निज भक्तों की सहायता करते हैं। साथ खड़े होकर उन्हें संभालकर, उनकी दुविधाओं*

*का अंत करते हैं। कितनी भी तेज आंधियाँ चलें, कितना भी तुफान उठा हो, बाबा अपने बच्चों को लेश मात्र भी उसका असर नहीं होने देते। साईं मात रूप से अपने बच्चे को आँचल में ले लेते हैं और आँधी, तुफान से बचा लेते हैं। अपने बच्चों की रक्षा करते हैं बाबा साईंनाथ। ऐसे प्यारे बाबा अपने बच्चों को अपनी गोद में उठाकर जन्म मरण के भयानक चक्कर से छुड़ा लेते हैं।*

*गौर करने लायक बात ये हैं बाबा ने अपनी पहली पंक्ति में कहा मैं कर्मों के फल देता हूँ। एक न्यायधीश की तरह, जैसे कर्म किए वैसे फल देते हैं। लेकिन सच्ची भक्ति, सच्चे प्रेम में बंधकर न्यायाधीश का रूप बदल गया। शरणागत जीव से वै कितने प्रसन्न रहते हैं यह अगली पंक्तियों में उन्होंने बताया। साईं माँ रूप से अपने बच्चों के लिए क्या नहीं करते ये उन्होंने बताया। निष्काम भक्तों की रक्षा, सुरक्षा, पालन-पोषण करता साईं को कोटि-कोटांग नमस्कार हैं। बाबा से बाबा को ही माँगकर हम अपने इस जीवन को संवार लें। मरणोपरान्त हमें न्यायधीश बाबा साईंनाथ के दरबार में हाज़िर होना है या फिर साईं माँ से मिलना है यह तो हमें आज ही तय करना होगा। यह सुनहरा अवसर है, एक तरफ तो होना ही है तो क्यों न आज ही तय करें न्यायधीश या माँ।*

*यदि तुम्हें कोई कहता है कि उसने अपनी मंज़िल सत्‌गुरु के बिना ही प्राप्त कर ली है तो तुम्हें पूरा हक है उसकी दयानतदारी पर शक करने का या समझ लेना कि वो सरासर झूठ बोल रहा है। सत्‌गुरु की रहमत से ही हम अध्यातम के मार्ग पर चलने के काबिल बनते हैं मंज़िल तक पहुँचने की बात तो दूर की है। तो ऐसा यदि कोई कहता है तो उसने सच्चाई को जाना ही नहीं, मंज़िल पाने की तो छोड़ दीजिए। अध्यात्मिक जीवन के लिए सत्‌गुरु के मार्गदर्शन की बड़ी भारी जरूरत है क्योंकि उन्होंने मंज़िल तक पहुँचने में आने वाली हर कठिनाई का सामना किया है, उस पर विजय पाई है इसीलिए वे हमें उनसे बचने में मदद करते हैं। हमें आने वाले भयानक गड्ढों से बचाते हैं और हाथ पकड़कर आगे बढ़ाते हैं। मजे की बात यह है कि वे अपने शिष्य को यह भी जानने नहीं*

*देते कि वे किस मुक्काम पर खड़े हैं। मंज़िल तक पहुँचा कर फिर शिष्य को ज्ञात कराते हैं कि तुम अपनी मंज़िल तक पहुँच गए हो। यह हमें हमारे प्राणप्यारे गुरुदेव श्री आनंद साईं ने बताया है।*

*प्राणप्यारे गुरुदेव श्री आनंद साईं जी की जीवन गाथा का आगे का भाग उन्हीं की कृपा दृष्टि से अब हम बखान करेंगे। सत्गुरु की लीलाएं अनंत, अखण्ड, अनमोल होती हैं, उनको मनुष्य बुद्धि से समझ पाना नामुमकिन है और पूर्णत: बयान करना भी मुमकिन नहीं। जितनी समझ वे दें उतना ही हम समझ पाते हैं।*

**गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरा।**
**गुरु साक्षात पारब्रह्म तस्मैय श्री गुरुवे नमः।।**

**ऐसा कहा जाता है कि जब इस ब्रह्माण्ड में जीवन नहीं था तब मात्र एक शब्द था और वो शब्द था ''ॐ''। ओंमकार शब्द ब्रह्म है। बाईबल में भी आता है कि जब कुछ भी नहीं था तब एक शब्द उजागर था और वो शब्द था ''भगवान''। युगों-युगों से कई संत महात्माओं ने इस एक शब्द ''ॐ'' पर ध्यान लगाकर सत्गुरु की दया से अपने परम लक्ष्य को प्राप्त किया है। आज कई संतपुरुष इसी शब्द की ध्यान साधना में लगे हुए हैं। श्री गुरु नानक देवजी ने ''एकोंकार'' कहा।**

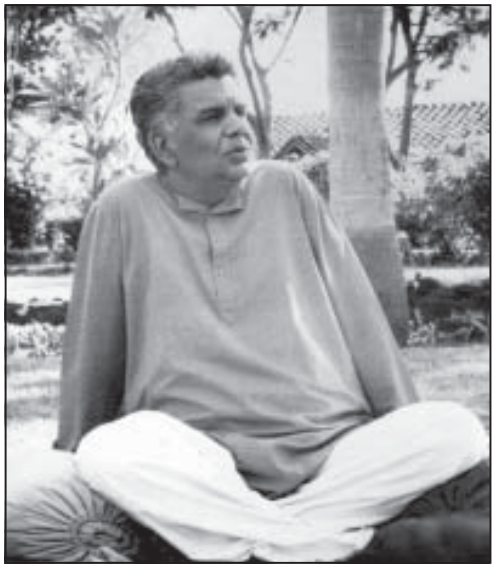

*समर्थ सद्गुरु श्री आनंद साईं*

मतलब, सच्चाई यह है कि सत् एक है और उसे ओंकार रूप से जाना जाता है। गुरुनानक देवजी यहीं पर नहीं रुके, उन्होंने कहा सत्गुरु प्रशाद। इस ओंकार को पाया कैसे जा सकता है? ''सत्गुरु प्रशाद'' सत्गुरु की कृपा मात्र से ही वह पाया जा सकता है। जब सत्गुरु प्रसन्न हो जाते हैं तब वे यह शब्द अपने शिष्य को प्रदान करते हैं। ''एकोंकार सत्गुरु प्रशाद''। हमारे जीवन में कितना महत्व है सत्गुरु का इसका यह एक और उदाहरण है। प्राणप्यारे सत्गुरु श्री आनंद साईं जी ने दो शब्दों का महामंत्र जगत् को दिया। ''गुरु ॐ'' सत्गुरु ॐ का प्रगट रूप हैं। गुरु ॐ शिष्य को अंधेरे से निकाल कर उजाले में ले जाता है। उसमें एक अद्वियत शक्ति है। गुरु ॐ जीव को बहिरांग से अन्तरंग की ओर खींचता है। मन को शांत और सकून देते हैं ये दो शब्द। कितनी भी बेचैनी कितना भी तनाव हो गुरु ॐ का उच्चारण करने से मन मस्तिष्क में शीतलता संचालित हो जाती है। सारी दुविधाएँ दूर हो जाती हैं। यह शब्द, प्राणप्यारे सत्गुरु श्री आनंद साईं जी के द्वारा कब और कैसे प्रदान किया गया?

प्राणप्यारे पापा हमें बीच-बीच में अध्यात्मिक सहल (पिकनिक) के लिए ले जाया करते थे। सत्गुरु के साथ ऐसे बाहर जाना और सहपरिवार या मित्रों के साथ बाहर जाना इसमें जमीन आसमान का फर्क है। सत्गुरु के साथ बिताया गया एक दिन अनेकों दिव्य अनुभव दे जाता है। ऐसे मनोहर अनुभव जीव की सत्गुरु के प्रति श्रद्धा और विश्वास बड़ा देते हैं। ऐसे ही एक बार तेलंखेडी बगीचे में सत्गुरु के साथ समागम करने का सभी शिष्यों को अवसर प्राप्त हुआ। १६ सप्टेंबर १९७३

को सभी शिष्य प्राणप्यारे पापा के निवास स्थान पर जहाँ सुबह-शाम सत्संग भी होता था एकत्रित हुए। वहाँ से वाहनों द्वारा सभी को तेलंखेडी बगीचे तक पहुँचाने की व्यवस्था की गई थी। सभी लोग हॉल में बैठे थे और प्राणप्यारे पापा के आदेश का इंतजार कर रहे थे। करीब ९ बजे के आसपास प्राणप्यारे गुरुदेव हॉल में आए और सभी उपस्थित शिष्यों से बोले कि बाबा साईंनाथ ने एक नाम धुन दी है और आदेश दिया है कि आज के बाद इस धुनि का जाप हर रोज सुबह-शाम किया जाना चाहिए। बाबा ने महामंत्र के साथ-साथ उसका सुर भी दिया है। श्री चक्रवर्ती जो उस समय दरबार में गाया करते थे, उपस्थित थे। प्राणप्यारे पापा ने उन्हें हारमोनियम पर सुर पकड़ने को कहा और स्वयं गाकर सुनाया। इस प्रकार महाराज बाबा का यह ''गुरु ॐ'' धुनि रूपी प्रसाद प्राप्त हुआ। थोड़े समय तक ''गुरु ॐ'' का उच्चारण दरबार में किया गया फिर सत्गुरु श्री आनंद साईंजी ने जाप रुकवाया और सभी को तेलंखेडी बगीचे में पहुँचने का आदेश दिया। बगीचे में पहुँचने के बाद प्राणप्यारे गुरुदेव एक झाड़ के नीचे बैठ गए और सभी शिष्यगण उनके सामने

बैठ गए। बैठते ही उन्होंने श्री चक्रवर्ती को ''गुरु ॐ'' की धुनि शुरु करने को कहा। इस महामंत्र की धुन जो बाबा ने दी थी इतनी मधुर है कि सुनते ही विचलित मन शांत हो जाता है बहिरांग में भटकती तंद्रा अंतरांग में उतरती चली जाती है। यही हाल उपस्थित सभी शिष्यों का उस समय हुआ। ''गुरु ॐ'' के सिवाय और कोई आवाज़ नहीं सुनाई दे रही थी। किसी को भी तन बदन की होश नहीं थी। मधम गति से गुरुॐ, गुरुॐ, गुरु ॐ, गुरु ॐ गाते हुए सभी की आँखों से नीर टपक रहा था। सभी शरीरों में प्रेम, शुद्धता और विश्वास जागृत था। ढोलक की ताल, मंजीरों की खनखनाहट वातावरण को और प्रफुलित कर रही थी। धीरे-धीरे यह गति बढ़ने लगी। ढोलक की ताल के साथ-साथ धुनि तेज होने लगी, सब लोगों के शरीर हिलने लगे। बैठे-बैठे ही गुरु ॐ कहते-कहते सभी झूमने लगे। कुछ समय पश्चात प्राणप्यारे पापा, जो अब तक ध्यान अवस्था में लीन थे उन्होंने आँखें खोली और खुली जगह में जाकर खड़े हो गए। सत्गुरु के उठते ही धीरे-धीरे सभी लोग खड़े हो गए और अपने प्राणप्यारे गुरुदेव के चारों ओर ''गुरु ॐ'' की धुनि करते हुए घूमने लगे। कुछ समय बाद सभी के पैर थिरकने लगे। किसी को भी शरीर

का भास नहीं रहा। इतने में श्रीमती बलिदेवी चाचरा देह भाव से परे होकर हाथ पैर हिलाकर नाचने लगी। उन्हें तन बदन की होश नही थी। कुछ ही समय में सभी का यह हाल हो गया। सभी उपस्थित शिष्य ''गुरु ॐ'' की धुनि पर देह भाव से उठकर अलमस्त होकर नृत्य करने लगे और अपने प्राणप्यारे पापा की प्रदक्षिणा करने लगे। एक अद्‌भुत आत्मिक नृत्य हो रहा था। उसी समय वरुण देवता भी आनंदित होकर बरसने लगे। किसी को भी तन बदन की होश नहीं थी। बाहरी संसार से बेसुध, संसार की व्याधियों से दूर, हर चीज़ से बेपरवाह किसी को किसी चीज़ की सुद्ध नहीं थी। बारिश में सब भीग गए थे इन सभी से बेखबर सब गुरु ॐ गुरु ॐ गाते हुए नृत्य किए चले जा रहे थे। उनके बीच प्राणप्यारे पापा श्री आनंद साईं अंतरांग में गुम होकर बारिश में भीगते दिव्य मुद्रा में खड़े थे। नृत्य करते-करते अब कुछ शिष्य मस्ती में झूमते-झूमते गिरने लगे। गिरने के बाद भी उन्हें होश नहीं थी। धीरे-धीरे करीब-करीब सभी लोग जमीन पर गिरे पड़े थे। किसी को भी अपनी स्थिती का भास नहीं था। प्राणप्यारे पापा ने मानो आत्मिक आनंद की बाढ़ लाई हुई थी। वो नायाब अद्‌भुत नज़ारा जो युगों-युगों में कभी-कभी ही देखा जाता होगा उस दिन उजागर हो रहा था। सभी ने गुरु में लुप्त होकर उसमें भरे अमृत का आस्वाद लिया। उस समय किसी के भाव को, किसी के भी अनुभव को जानना संभव नहीं था। जिस किसी ने उस अमृत को चाखा वो 'वाह' के सिवाय कुछ और नहीं कह सका। प्राणप्यारे गुरुदेव जैसे ही बहिरांग में आए वे एक-एक कर अपने हर बच्चे के पास गए उन्हें आशिर्वाद दिया, प्यार किया और आश्चर्य ये था कि उनका हाथ लगते ही बच्चे साधारण स्थिति में लौटते जा रहे थे। सभी को सुस्थिती में लाकर प्राणप्यारे पापा थोड़ी देर आराम करने के लिए चले गए। सभी को पानी पिलाया गया। सब **normal** हो गए लेकिन कोई भी यह नहीं बता सका कि उसे क्या हुआ था, उसने क्या पाया। एक अद्भुत लौकिक अनुभूती सभी को हुई जिसे शब्दों में ब्यान करना नामुमकिन था, सभी के लिए। गुरु ॐ इस महामंत्र में कितनी ईश्वरीय शक्ति भरी है यह अनुभव लेने की बात है। गुरु दया

मिनटों में हमारा काया कल्प कर देती है इसीलिए गुरु दया की याचना करते रहना चाहिए बाकी सब तो उसके साथ अपने आप आ ही जाता है।

दि. २६ अगस्त १९७३ को प्राणप्यारे पापा सभी बच्चों को साथ लेकर रामटेक गए। नागपुर से करीब ४५ कि.मी. दूर यह वह स्थान है जहाँ श्री रामचंद्रजी बनवास के समय माता सीता व भ्राता लक्ष्मण के साथ कुछ समय रुके थे। छोटी सी टेकडी पर श्री राम का एक भव्य पुरातन मंदिर है। इस टेकड़ी के नीचे स्वामी सीतारामदासजी महाराज का आश्रम है। इस आश्रम का कुछ भाग जमीन के नीचे है जिसे स्वामीजी की गुफा के नाम से जाना जाता है। यहाँ स्वामीजी ने तपस्या की थी। रामजी के दर्शन के बाद सारा दिन स्वामीजी की गुफा व आश्रम में व्यतीत

किया गया। यह श्री आनंद साईं जी के गुरु का स्थान है अत: उनके श्री मुख पर एक अद्भुत तेज देखने में आ रहा था। पूरे दिन भजन कीर्तन के साथ अपने गुरुदेव की महिमा वे सुनाते रहे। शाम को सभी जन प्राणप्यारे पापा के साथ वापस नागपुर लौट आए।

प्राणप्यारे गुरुदेव श्री आनंद साईं जी ने कहा है कि अध्यातम का रास्ता दया का रास्ता है। तुम्हारी अपनी करनी कुछ हद तक ही सीमित स्वरूप की मददगार हो सकती है। जन्म-मरण के चक्कर से निकालती है दया, गुरु दया। सत्गुरु, ईश्वर और हमारे बीच संपर्क स्तोत्र हैं इसीलिए तो कहा गया है कि यदि निर्वाण पद पाने की अभिलाषा है तो सत्गुरु की शरण में जाना लाज़मी है। परम पद को प्राप्त करने के जो भी जिज्ञासू हैं उनको यह जान लेना अत्यंत महत्वपूर्ण है। सत्गुरु की दया भरी एक नज़र हमें कहाँ से

कहाँ ले जाती है। उनके लिए कोई नियम बंधन नहीं है। उनकी मौज है, किसी भी बात पर, किसी भी समय, किसी पर भी कृपा दृष्टि हो जाए। ईश्वर भी जब-जब धरती पर अवतार लेकर आए उनके हर रूप ने गुरु मर्यादा का पालन किया है। उन्होंने अपने गुरु को कितना मान-सम्मान दिया। खुद परमपिता परमेश्वर होकर भी उन्होंने सत्गुरु को नमन किया।

प्राणप्यारे पापा कभी-कभी सब शिष्यों के साथ अध्यात्मिक सहल के लिए शहर के बगीचों में जाया करते थे। पूरा एक दिन सभी बच्चे सत्गुरु के संग बिताते थे। दिन भर उनकी मधुर वाणी सुनने को मिलती थी। भजन, संकीर्तन, नाम धुन सारा दिन थोड़े-थोड़े अंतराल के बाद चलते रहता। प्राणप्यारे पापा इस दरम्यान गोलियों (sweets) का खेल भी हमें खिलाते थे। यह गोलियों का खेल क्या था? शायद ऐसा खेल किसी ने खेला तो नहीं होगा अपितु शायद सुना भी नहीं होगा।

एक बड़े बर्तन में छोटी-बड़ी, अलग-अलग प्रकार की गोलियाँ, चॉकलेट जमा की जाती थीं। यह गोलियों से भरा बर्तन प्राणप्यारे गुरुदेव की बगल में रखा जाता था। सभी प्राणप्यारे के बच्चे उनके सामने बैठ जाते और ''साईं मैय्या तेरी सदा ही जै'' का जोर-जोर से उद्घोष करते। जब उद्घोष चरम सीमा पर पहुँच जाता तो प्राणप्यारे सत्गुरु उस बर्तन में से गोलियाँ उठा कर शिष्यों की ओर हवा में उछाल देते। क्या बूढ़े क्या जवान जिस ओर गोलियाँ उछाली जाती उस ओर सब टूट पड़ते

और ज्यादा से ज्यादा गोलियाँ लूटने की कोशिश करते। इसके लिए बच्चों की तरह छीना-झपटी भी करने को आगे-पीछे नहीं देखते। अभी ऐसा चल ही रहा होता तो प्राणप्यारे गुरुदेव दूसरी ओर गोलियाँ उछाल देते फिर सभी उस ओर से गोली झपटने की कोशिश करते। गोलियाँ खत्म होने तक यह खेल चलते रहता था और ''साईं मैय्या तेरी सदा ही जै'' का उद्घोष होते रहता था। उस समय कुछ ऐसे बुजुर्गवार भी थे जो इस खेल में शामिल न होकर एक कोने में दुबक कर बैठ जाते थे। अंतरयामी प्राणप्यारे पापा सब जानते थे। वे ऐसे जीवों की ओर हँसते-हँसते गोलियाँ फेंकते और उनके आस-पास के सभी लोग गोलियाँ झपटने के लिए उन पर टूट पड़ते। वे गोलियाँ लूटना छोड़कर अपने आपको बचाते और सबको दूर रहने को कहते लेकिन कोई नहीं सुनता सब गोलियाँ उठा लेते। जैसे पापा देखते कि वहाँ अब गोलियाँ नहीं हैं तो फिर उनके ऊपर गोलियाँ उछालते और फिर सभी बच्चे उस जगह पर टूट पड़ते गोलियाँ लूटने को। इस प्रकार प्राणप्यारे पापा उन लोगों को भी खेल में शामिल कर लेते थे। इस खेल का गूढ़ मर्म प्राणप्यारे पापा श्री आनंद साईंजी ने बहुत ही सुंदर ढंग से समझाया। उन्होंने बताया कि जब तुम यह खेल खेलते हो तो तुम इसमें इतने तल्लीन हो जाते हो कि तुम्हारा पूरा ध्यान साईं मैय्या की जै जैकार करने में और गोलियों में ही एकाग्रित रहता है। उस समय तुम्हें दुनियाँ की कोई खैर खबर नहीं रहती। तुम अपनी संसारिक उपाधियों को भी भूल जाते हो। अपनापन त्यागकर, अहंकार भूलकर गोलियाँ लूटने में ही तुम्हारी एकाग्रता जमी रहती है। बच्चों की तरह गोलियों के लिए छीना-झपटी करते हो। अध्यातम के रास्ते में सबसे बड़ा रोड़ा अहंकार तुम्हारे अंदर से कुछ समय के लिए लोप हो जाता है। अध्यातम् में जीव का सर्वनाश करनेवाला यह अहंम रूपी राक्षस कई जिज्ञासूओं को खा चुका है। अहंकार को दूर करने में यह खेल काफी मददगार साबित होगा। कुछ समय के लिए तो सभी का अपनापन स्वाहा हो जाता है।

*श्री गुरु चरणम् समर्पयामी*

''ॐ साईं आनंदाय नमः''

# आनंद का पथ

## (श्री आनंद साईं जी के अमृत वचन)

*''आनंद का पथ'' इस शीर्षक के अंतर्गत या फिर अन्य शीर्षकों के अंतर्गत प्राणप्यारे गुरुदेव श्री आनंद साईं जी द्वारा दिए गए प्रवचनों को लिपिबद्ध कर सर्व जगत् के कल्याण के लिए प्रकाशित किया जा रहा है। लगभग हर बार ही ऐसा होता था कि प्राणप्यारे गुरुदेव प्रवचन शुरु ही करते थे और फिर सोयम् ईश्वर के रूप से सीधी वाणी आना शुरु हो जाती थी। ऐसा एक बार नहीं अनेकों बार हमने आँखों से देखा और कानों से सुना है इसीलिए इस पत्रिका में दिए जा रहे लिपिबद्ध प्रवचन में कई बार माँ भगवती या बाबा साईंनाथ सोयम् हमें अपना रास्ता बताते हैं। पाठकों की जानकारी व प्रकाशित प्रवचन ठीक से समझने हेतु ये जानकारी दी जा रही है।*

***– संपादक***

## सत्स्वरूप सत्गुरु

जीव को अपनी जिम्मेदारी आप नहीं लेनी पड़ती माँ ले लेती हैं। शक्ति उपासना करनी और फिर अपने जीवन की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेना ये दोनों चीज़े साथ-साथ बनती नहीं है। मतलब हम बच्चे नहीं बन रहे हैं। **जो माँ के आसरे रहता है अपनी जिम्मेदारी माँ के हवाले कर देता है उसकी पूरी रक्षा होती है।** जो दृढ़ता से माँ के अर्पित हो जाता है मैं उसकी पूरी रक्षा करती हूँ। मिट्टी का पुतला क्या कर सकता है सब कुछ करने कराने वाली माँ आप हैं। इस सच्चाई को दृढ़ करो हम शक्ति माँ के साथ हैं। दृढ़ करो आज के बाद शक्ति माँ के आसरे रहेंगे फिर देखो क्या होता है। मुश्किल क्या है, बोल सब देते हैं जब रहने का समय आता है तो कोई नहीं रह पाता। ये सेवा का दरबार है जगत् की सेवा यहाँ से हो रही है कौन कर रहा है? मनुष्य बुद्धि बोलेगी मैं कर रहा हूँ, फलाना कर रहा है शक्ति को किसी की मदद की जरुरत नहीं है। शक्ति अपनी सेवा आप

करती है। शक्ति हमें मान दे रही है, तू भी सेवा कर। खेल सारा शक्ति माँ का है, उसको अपना खेल करने के लिए हमारी मदद की जरुरत नहीं है, शक्ति का खेल हो रहा है। शक्ति के आगे सिर झुका दो। सिर झुका देना मतलब अपना आप निकाल देना। दृढ़ता लाओ। दृढ़ होकर अर्पित हो जाओ फिर देखो तुम्हारी रक्षा कैसे होती है।

जब तक कर्म भोग नहीं जाएगा दवाई क्या करेगी। उस कर्म को काटने के लिए कुछ साधना करनी चाहिए। नाम सिमरन करना चाहिए। कृपा, कृपा, कृपा, कृपा ही सब कुछ है। जीवन अर्पित हो जाएगा तो कृपा अपने आप आएगी। हम माँ के आसरे रहेंगे, माँ हमें आसरा कैसे नहीं देगी। जितना हम अपने आप को अर्पित करते जाते हैं कृपा आती जाती है। **जीवन में जो हुआ वो भी ठीक है, जीवन में जो हो रहा है वो भी ठीक हो रहा है, आगे जो भी होगा वो भी ठीक ही होगा।** जितना अपनापन निकालते जाओगे इतनी दया आती जायेगी। सब ब्रह्मण्डों में खेल हो रहा है। सब कुछ मेरे संकल्प से होता है जो संकल्प हो गया वो पूरा होते जाता है। मनुष्य को कुछ नहीं करना पड़ता। यही भीख माँगू सदा, इच्छया तेरी पूरण होए। करके देखो, एक दिन ये प्रार्थना करके देखो तेरी इच्छया पूरण होए। करके देखो, ईश्वरीय शक्ति कैसे तुम्हारी रक्षा करती है। इच्छया तेरी पूरण होए। तो अपनी इच्छया की जगह कहाँ है। होने दो, उसमें कुछ कष्ट भी आता है तो वो so called कष्ट है, होने दो। जो सदा सर्वदा इच्छया में रहता है वो मेरी जिम्मेदारी है भाई। उसको भीख नहीं माँगनी पड़ती भाई। वो इच्छया के बिना कुछ चाहता ही नहीं है। लाखों साधनाएँ इसमें आ जाती हैं। मैं कहता हूँ तू मेरी इच्छया में रहता है तो मैं तेरा हो गया, मैं तेरा तू मेरा। मेरे जन की हानि कौन कर सकता है। तू सच्चे मन से मेरी इच्छया में रहते जा फिर तू मेरा है, मैं तेरा हूँ। तेरी पूरी जिम्मेदारी मैंने अपने हाथ में ले लिया है। ये प्रार्थना हम शब्दों में कर रहे हैं, अब इससे आगे जाने की जरुरत है। इसमें रहने की जरुरत है। अब हमने अपने आप को माँ के चरण-कमलों में कुर्बान कर दिया, तेरी इच्छया मेरी इच्छया नहीं। दृढ़ता से अर्पित होकर रहो। हुक्म का पालन करते जाओ। हुक्म में रहते जाओ। लाखों जन्मों की बिगड़ी बन जायेगी।

कर्म भोग से डरो नहीं अर्पित जीव के लिए कर्म भोग अति कल्याणकारी होते हैं। फिर से कहता हूँ, अर्पित जीव के लिए कर्म भोग अति कल्याणकारी होते हैं। अर्पित जीव के लिए अमंगल कहाँ? जगत् के ऊपर खराब समय आया हुआ है। सारा जगत् संकट की घड़ी में से गुजर रहा है। जगत् को मेरे प्रचार की जरुरत है, वो ही कार्य मैं तुमसे करा रहा हूँ। मेरा काम मैं मिट्टी के पुतलों द्वारा खुद करता हूँ। जो कुछ भी सेवा करनी है अहंकार निकाल कर करनी है। **करते जाओ सेवा जितनी भी बन पड़ती है। जो परहित में लगे हैं उनके कर्म मैं खा जाता हूँ। जो अपना कल्याण चाहता है उसको दूसरों की सेवा करनी चाहिए। अपना कल्याण अपने आप हो जाएगा।** जो अपना ही हित चाहता है उसको दूसरों की फिकर नहीं है वो मेरा भक्त नहीं है। मेरा भक्त दूसरों की सेवा में ही जीता है। बहुत मंगलमय जीवन तुम्हें दिया है। सच्चे मन से सेवा करो भगवान तुम्हारा सबका कल्याण करेंगे परन्तु सेवा में पीछे नहीं हटना। ईश्वर के द्वार पर आए हैं तो एक ही विचार मन में रहना चाहिए कैसे ईश्वर की गोद प्राप्त हो, दूसरा कोई विचार उठने ही नहीं देना चाहिए। सच्चे मन से जो मेरी इच्छा में रहने की भीख माँग रहा है। मैं कहता हूँ कर्म काटो इसके, थोड़े-थोड़े में पूरा कराओ। जो अपनी मनुष्य बुद्धि चलाता है उसको कर्म पूरा भोगना पड़ता है। मैं रोज कहता हूँ जो भी मानव चोले में आया है उसको कर्म तो भोगना ही पड़ता है, कर्म तो पूरे कराने ही पड़ेंगे। कैसे दु:ख कर्म कम से कम में पूरे हों। ''निज इच्छया में राखिये हे मेरी साईं माँ।'' अब कौन माँ अपने बच्चे को भयानक कर्म देगी। जो इसमें रहता है वो बचते जा रहा है। जो इसमें रह रहा है तेरी इच्छया पूरण हो। रहो इच्छया में मैं अभी दया देता हूँ, रह कर तो देखो।

**प्रारब्ध-प्रारब्ध लोग कहते हैं प्रारब्ध तो मेरी बनाई हुई है। सर्व शक्तिमान के सामने कौन-सी उल्टी-सीधी शक्ति ठहर सकती है। दृढ़ रहो, उमंग में रहो। उमंग में ही आनंद है, उमंग से मेरा भजन करो। उमंग से मेरा नाम लो। उमंग से मेरा काम करो मेरा जंत्र बनकर।** दृढ़ करो मैं अर्पित हूँ, मेरे कर्म थोड़े-थोड़े में पूरे हो रहे हैं। खुद अनुभव करेंगे भगवान की दया को, दूसरों को दिखा सकेंगे भई हमें मिली है तुम भी रहो। अनुभव ही दूसरों को खींच कर

बाहर लाता है। दृढ़ता बातों से नहीं आती अनुभव से आती है। जो अपनी आत्मा को अनुभव हो रहा है उसमें धोखा कहाँ है। **सुख-दुःख तो सबके साथ बना है परन्तु दुःख की घड़ी में सच्चा साथी एक ही है जिसको कहते हैं बाबा साईंनाथ। ये हाथ कभी फेल नहीं होता।** मैंने तुम सबके लिए क्या नहीं किया। दृढ़ता लाओ अपने अनुभव से। मेरे को जीवन का क्या अनुभव है। मैं सारी बातें तुमको समझा रहा हूँ। **जो कहता है – हे माँ तेरे बिना कुछ नहीं होना, बाबा उसको बच्चा बना लेते हैं, बाबा उनको अपनी गोद में ले लेते हैं। मेरा जन मेरे सिवा कुछ नहीं चाहता। ये मेरी आवाज है बाबा साईंनाथ की आवाज है। मेरे बच्चे जगत् में अपने लिए नहीं आते दूसरों के लिए आते हैं। सबका भला हो सर्वत का भला हो। जिसने मुझसे मुझको माँगा उसको सब कुछ मिला।** हमारी दया से ही जगत् में दया आती है। इस सच्चाई को समझने का है।

साईं के जो भी सच्चे भक्त हैं वो माँ से माँ को माँगते हैं कुछ और नहीं चाहते। दुनियाँ सबको भक्त कहती है अभी तुमने क्या देखा है। दस सालों में शिर्डी में पैर रखने की जगह नहीं रहेगी। (यह बात गुरुदेव श्री आनंद साईं जी ने सन् 1992 में कहीं थी।) बाबा फकीर हैं, गरीबों के हैं, फकीरों के हैं। फकीर के बच्चे बनना है तो फकीर बन कर रहो। अमीरी की तरफ क्यों देखना। तू मेरे को सच्चे प्रेम से जीत सकता है। सच्चा प्यार कर मैं तेरा हो जाऊँगा। तू मेरा बन जा मैं तेरा बन जाऊँगा। नाता जोड़ अरे यहीं बैठ कर नाता जोड़। क्या पता अगला स्वास आएगा कि नहीं आएगा। सचमुच तू एक मेरा साथी है। अरे मुझे पाना है तो मुझे भीलनी के बेर खिला, पा लेगा मुझे। मैं भीलनी का हूँ, राजाओं का नहीं हूँ। जो भीलनी के बेर खिलाएगा वो पार हो जाएगा। सच्चा नाता कायम कर। भीलनी के बेर खिला सब कुछ पा लेगा। गुरु की शरण लेना या मेरी शरण लेना भेद ही क्या है। गुरु में कौन है? गुरु का कार्य तब शुरु होता है जब जो उस चोले में था उसको ले लिया जाता है। फिर माँ अपना काम करती हैं उस चोले के अंदर बैठकर। तो गुरु अर्पित होने का मतलब, किसके अर्पित होने का है? आप बोलोगे मेरे। ये साईं गीता कोई मनुष्य बना सकता है? अमृत सागर कोई मनुष्य लिख सकता है ये अमृत पिलाने वाले ग्रंथ हैं, जिसकी वाणी पार लगा देती है। उसमें

जीव का अपनापन कहाँ है। गुरु अर्पित होना या माँ के अर्पित होना एक ही चीज़ है, भेद क्या है? गुरु रूप के द्वारा अंदर की चीज़ बाहर आती है। जो अंदर की आवाज हम नहीं सुन सकते वो हमें गुरु वाणी के द्वारा सुनाई जाती है।

गुरु महिमा को जानो तर जाओगे। गुरु शक्ति की महिमा को जानो तर जाओगे। जिस रूप से मैं चलाता हूँ उस रूप से मैं रक्षा भी देता हूँ। जिस रूप में मैं बैठ कर ये मार्ग बताता हूँ उस रूप में बैठकर मार्ग पर चलाता भी हूँ। एक मैं ही गुरु हूँ मेरे सिवा दूसरा गुरु नहीं हो सकता है। मैं ही यहाँ पर बैठा इस चोले में से गुरु का कार्य कर रहा हूँ। भूल मत करो मेरी पहिचान करो। जो चोला रहते-रहते पहिचान कर लेगा वो पार हो जाएगा। पीछे तो सबको होगी पहिचान परन्तु वो बात नहीं रहेगी। **जब तक जगत् में साईं गीता, अमृत सागर, साईं माँ रहेगी इस चोले का नाम अमर रहेगा। जुग आएँगे जुग जाएँगे जो साईं गीता से मुराद माँगेगा वो पूरी होएगी ही होएगी। पहिचान करो, पहिचान करो। जहाँ से अमृत बह-बहकर सर्व जगत् को पावन कर रहा है उस उत्पति स्थान की पहिचान करो मुझे ये ही कहना है।** जो ये ज्ञान गुरु से ले लेगा वो प्रकाश स्वरूप हो जाएगा। गुरु को अपने लिए मनवाना नहीं पड़ता न ही उनकी इच्छा होती है कि लोग उन्हें माने। मैं माँ हूँ, मैंने उनके द्वारा सर्व जगत् का उद्धार किया है। मैं दुनिया को बताना चाहती हूँ कि ये मेरा रूप है। मैं मनवाना चाहती हूँ, मैं माँ हूँ न। ये मेरा बच्चा दिन-रात प्रार्थना करते रहता है तेरा खेल तेरा ही रहे लेकिन मेरी खुशी है, जिसने अपने को मिटा दिया है मैं उसको मनवाऊँगा। जो इसका है वो मेरा है। जो अपने गुरु का नहीं बनता उसको मैं देखना भी नहीं चाहता। न माँ देखता चाहती हैं न मैं देखना चाहता हूँ। जो अपने लिए कुछ भी नहीं चाहता वो मेरा स्वरूप है। मैं उद्धार करूँगा उसी का, जो हमको मानेगा। जब-जब जगत् में मेरा खेल होता है लाखों चलते हैं आखिर में चार ही रह जाते हैं। जो निंदकों के चक्कर में आ जाते हैं वो डूब जाते हैं। भूलना नहीं हम दोनों ने तुम्हें अपना बच्चा दे रखा है। हम भी तकलीफ उठा रहे हैं ये भी तकलीफ उठा रहा है। हुक्म का पालन करने के लिए ये इतनी तकलीफें उठा रहा है। लोग पत्थर मारते हैं, गालियाँ देते हैं ये सहता है, हुक्म में बंधा ये सह रहा है। दुनियाँ

की खट्टी-मीठी सुनते रहना और जगत् का उद्धार करते रहना। गुरु का ये चोला तुम्हारे बीच न होता तो तुम्हारे सबके जीवन का नक्शा ना बदला होता। भला-बुरा तुम्हारे हाथ में हैं। सब समझ मैंने दे दी है। २८ जनवरी को जो चार शब्द मैंने लिखाए थे वो युग-युग तक जीवों को अमृत पिलाएंगे। साईं भक्तों के लिए ये वेद वाणी है, ये साईं की वाणी है। यह वाणी इसीलिए दी गई है कि ये कार्य जगत् में होने वाला है। जो सच्चे गुरु हैं वो अपने से सेवा नहीं करते पीछे से आदेश होता है। यहाँ आकर मेरे हो जाओगे मैं तुम्हें अपनी गोद में ले लूँगा। लेकिन टेस्ट में से गुजरना पड़ता है ये कच्चा धागा तो नहीं है कच्चा धागा है तो आगे जाकर धोखा दे देगा। जो साईं गीता की शरण में आयेगा वो सब कुछ पाएगा। ये सत् की आवाज है ये जुग-जुग में गूँजेगी। जहाँ साईं का भजन होगा वहाँ पहले यह प्रार्थना की जाएगी।

**वंदऊँ साईंनाथ मैं पूरण परमानंद।**
**बाबा दीनदयाल के नाम दियो आनंद।।**

गुरु की मर्यादा को जानो, जो गुरु की मर्याद रखेगा वो ही पार होएगा। जो गुरु की मर्याद भंग करेगा वो एक पल में साईं चरण से अलग हो जाएगा। साईं के साथ उसका नाता नहीं रह सकता। ये ज्ञान गोदड़ी है। ये गुरु का ज्ञान है। कल का दिन वो पावन दिन है जिस दिन मन में ये संकल्प उठ गया कि अब जगत् का उद्धार करना है, अब समय आया है जगत् की सेवा करने का। जो इस इतिहास को मन ही मन में मनन करेगा उसके सब पाप ताप कट जाएँगे। ईश्वर के वचन कभी झूठे नहीं हो सकते। सकल जगत् का उद्धार होएगा वाणी के द्वारा। सत् जब भी जगत् का उद्धार करता है वाणी के द्वारा करता है, वाणी सत् का स्वरूप होती है। वाणी का प्रचार करो। मेरी वाणी घर-घर पहुँचाओ। देखो कैसे मैं जीवों के दु:ख-दर्द खा रहा हूँ फिर साईं गीता खोलो उसमें जो तस्वीर है इसी में शिर्डी है।

**सच्चे मन से जो भी मेरे इस स्वरूप की शरण में आएगा मैं हाथ उठा कर वचन देता हूँ उसकी झोली भर दी जाएगी।**

***'' जै मैय्या ''***

# श्री महाकाली महिमा

जै जै महाकालिका माई। काली नाम परम सुखदाई।।
जै जै महाकालिका माई। कण-कण में है आप समाई।।

जै जै महाकालिका माई। वेद पुराणन महिमा गाई।।
जै जै महाकालिका माई। पतित जनों को पार लगाई।।

जै जै महाकालिका माई। भगत् जनों की सदा सहाई।।
जै जै महाकालिका माई। अपने आप से जगत् उपाई।।

जै जै महाकालिका माई। आपे सुत आपे ही जाई।।
जै जै महाकालिका माई। कर्म अकर्म हमें समझाई।।

जै जै महाकालिका माई। भक्ति मांही हमें लगाई।।
जै जै महाकालिका माई। तन मन से हमको शरणाई।।

जै जै महाकालिका माई। अपने आप का ज्ञान कराई।।
जै जै महाकालिका माई। अपनी स्तुति आप कराई।।

जै जै महाकालिका माई। आपे सब कुछ लिखे लिखाई।।
जै जै महाकालिका माई। कलयुग साईं नाम धराई।।

जब-जब भीड़ पड़ी देवों पर, महाकाली ने आन बचाई।
तीन लोक से गूंज उठी तब, जै जै महाकालिका माई।।
विष्णु जी हैं शंख बजावें, डमरू की आवाज भी आई।
सुर नर मुनि सब मिलकर गावें, जै जै महाकालिका माई।।
जै जै महाकालिका माई। जै जै महाकालिका माई।।

## *''ॐ श्री साई''*

कोई मुझे भुलाए माँ।
माया मांही फँसाए माँ।।
उल्टो सबक सिखाए माँ।
बुद्धि को भरमाए माँ।।
तेरो चरण छुड़ाए माँ।
तुझ बिन कौन बचाए माँ।
तुझ बिन रहा न जाए माँ।।
बच्चा माँ को पाए माँ।।
गोदी मांही समाए माँ। तुझ में ही मिल जाए माँ।।
अपना आप गंवाए माँ। तू ही तू रह जाए माँ।।
माँ माँ माँ माँ ...

# सत्मार्ग

हरि का सच्चा भजन हरि की इच्छया में रहना है। किसी भी बात में, किसी भी स्थिति में अपनी इच्छया नहीं उठाना है। इच्छया में रहने के लिए हम आए हैं। इच्छया की पूर्ति के लिए हम आए हैं। इच्छया की पूर्ति क्या है? जो सेवा हमको देकर भेजी गई है उसमें अपना पन नहीं लाना, अपना हित नहीं देखना, सर्व जगत् साईं का है। साई हमारे अंदर से सब कुछ करा रहे हैं। इसका मतलब एक ही है कि हमारा हर कर्म सबके भले के लिए है केवल निजी हित के लिए नहीं है। अपनापन निकाल कर दूसरों की सेवा में लगे हुए हैं इससे अच्छा रास्ता और कोई हो ही नहीं सकता। मुश्किलें आएंगी, तकलीफें आएंगी लेकिन जो एक धुन से परसेवा में लगा है उतना उसका दु:ख कम होते जाएगा। जितना लोग सत् मार्ग में लगेंगे उतना दु:ख कम होते जाएगा। सच्ची साधना क्या है अतरंग में माँ के चरण-कमलों में रहना और बाहरी शरीर को कर्मों के हवाले कर देना अपने कर्मों की अदायगी के लिए। शरीर बाहर कहीं भी घूमता रहे मन अंतर आत्मा में विलीन रहना चाहिए। नामी और नाम में भेद नहीं है। इस बात को दृढ़ करके फिर नाम लेना है। बाबा हमारा असली अपना आप हैं। हम असल में अपना ही नाम ले रहे हैं। राम कहें या सोहम कहें भेद नहीं है। इस सच्चाई को अच्छी तरह से समझने का है।

मुश्किलों से, तकलीफों से डरो नहीं। सब समय एक समान नहीं रहता। बुरे के बाद अच्छा, अच्छे के बाद बुरा आता ही है। कर्मों की गति न्यारी है। मनुष्य बुद्धि से जानी नहीं जा सकती हैं। सावधानी से रहना है। कोई गलत कर्म अपने से होने न पाए। हरि इच्छया में रहेंगे तो हमारी रक्षा होएगी ही। कोई गलत कर्म हमसे हो ही नहीं सकेगा। जो सदा अपनी इच्छया उठाता है उसी से गलत कर्म होते हैं। नाम की महिमा अपरम्पार है, जो स्वास-स्वास से हरि नाम लेते जाता है उसका बहुत सारा संकट नाम के साथ कटते जाता है। नाम का साथ छोड़ना नहीं है। कलयुग में नाम की महिमा अपरम्पार है। शिर्डी हमारे घर में है यदि हम

बाबा को अपनी अंतर आत्मा जानते हैं तो हम शिर्डी में ही हैं। यदि हम उनको अपने अंदर देखते हैं तो हमारा उद्धार होने ही वाला है।

सेवा के कार्य में जरा भी सुस्ती नहीं करना। एक-एक संदेश जाने की बड़ी भारी कीमत है। सेवा का प्रकाश फैल रहा है धीरे-धीरे। मेरा खेल देखते जाओ, कर्म भोग की परवाह मत करो। जब-जब उदासी आने लगे मेरा खेल आनंद देगा। कैसे धीरे-धीरे मेरा खेल बढ़ते जा रहा है। हम संसारी सुख उठाने जगत् में नही आए। सत् सेवा से प्यासी आत्माएँ संतुष्ट हो रही हैं। तो क्या हुआ एक शरीर ने दु:ख उठा भी लिया तो क्या हुआ उसकी चिंता मत करो। खेल का आनंद लो। जब हम साथ हैं तो डर काहेका। कर्म भोगना मानव का धर्म है। हर कर्म सोच समझ कर करना चाहिए। जल्दबाजी में कोई भी कर्म नहीं करना चाहिए हानि होती है। जैसा हम कराते जाएँ करते जाओ। संसार के मेले में सब उल्टा-सीधा सामने आता है। अपनी मर्जी से कुछ नहीं करना चाहिए। ईश्वर की सेवा सबको मिली है। करते जाओ सेवा सच्चे मन से। दूसरी भलती-भलती बातों की तरफ मत देखो। हम बैठे हैं हम सब सम्भाल लेंगे। तुम अपना मन सेवा में लगा कर रखो। सेवा में कहीं भी ढील मत आने दो। हमारी सेवा से दूसरों का उद्धार हो जाएगा तो हमारा उद्धार अपने आप हो जाएगा। जो अपने हित के लिए जीता है उसने फिजुल में मानव चोला पाया। चलते जाओ जैसे मैं चलाते जाऊँ करते जाओ जैसे मैं कराते जाऊँ। सब मेरा खेल है, मानव का खेल नहीं है। भगवान की इच्छया में रहते जाओ। सच्चाई का संदेश सबको देते जाओ। दूसरों को सद्बुद्धि देना मामूली बात नहीं है। कभी भूल कर भी किसी को गलत राय नहीं देना जिससे वो गलत रास्ते चले जाए। उससे हमारे ऊपर जिम्मेदारी आ जाती है। किसी को भी गलत रास्ते चलने के लिए बढ़ावा नहीं देना। भले कोई नाराज हो। सत्मार्ग बताते जाना, निडर होकर उससे दूसरों का कल्याण होता है। दूसरे गलत कर्म करने से बाज आ जाएँगे। किसी के गलत कर्म में हमने हाँ में हाँ मिला दिया हमारी भी जिम्मेदारी हो गई। जिस कार्य के लिए आये हो करते जाओ बाकी सब हम सम्भाल लेंगे।

***'' जै मैय्या ''***

बच्चे अपनी रक्षा आप नहीं करते माँ करती हैं। जो इस वाणी के एक-एक शब्द को अपनाएगा केवल वो ही मुझे पा सकता है। ये वाणी ही सत्मार्ग है, पूर्ण गुरु की पूर्ण सीख है। सरल स्वभाव वाला ही इसको समझ सकता है। सरल स्वभाव वाला ही इस पर चल सकता है दूसरा नहीं। सर्व जगत् मेरी इच्छा में चल रहा है। जब तक जीव अपने अहम् को पूरे मन से मेरे चरण कमलों में चढ़ा नहीं देता तब तक उसके उद्धार की कोई सूरत नहीं है। चाहे वो कोई भी रास्ते से आए। पूर्ण रूप से चढ़ाने का अर्थ तेरा सुख भी कबूल, तेरा दु:ख भी कबूल। ये चढ़ावा जब तक जीव चढ़ाता नहीं तब तक उद्धार की कोई सूरत नहीं है। तेरा दिया सुख भी कबूल तेरा दिया दु:ख भी कबूल। जब अंतरंग की समझ आती है तो जीव को भास होता है कि जब तक अपना हिसाब पूरा नहीं होता तब तक इस जगत से जाना ठीक नहीं है। अपनी माँ की खुशी के लिए, माँ की प्राप्ति के लिए अपना हिसाब चुका कर जाना है। कल महाशिवरात्री है बड़े भाव से मनानी है। पिछले सालों की तरह शाम को दूध लेकर आना है। शिवलिंग पर चढ़ाना है, मुझ पर चढ़ाना है। जो अपने आप को चढ़ा सकते हैं उसको पूजा की कोई आवश्यकता नहीं है फिर भी जगत् के कल्याण के लिए पूजा करनी ही चाहिए। रात को मेरा भजन कीर्तन गुणवाद होना चाहिए। जो जितने समय तक बैठ सकता है बैठना चाहिए। समय की कोई पाबंदी नहीं है। रात को लंगर करना है। गरीबों को भी भोजन कराना है बाकी समय भजन करने की जरुरत है और कुछ करने की जरुरत नहीं हैं।

ये दरबार निष्काम भक्ति का दरबार है। सरल स्वभाव बनकर आओ। कुछ कमजोरी आती है मेरे चरण कमलों में प्रार्थना रखो उनसे निकालने की। सच्चे मन की पुकार सुनी जाती है। जब सब मेरा खेल है तो चिंता काहेकी। मेरे खेल में कौन दखल दे सकता है। मेरे खेल को कौन बदल सकता है। जिसके लिए जो तय है सो तय है। कोई बदल नही सकता है। ईश्वर अर्पित रहना चाहिए।

खेलते जाओ मेरा खेल अपनापन कहीं भी मत लाओ सुंदर लीला हो रही है। धीरे-धीरे प्रकाश बढ़ते जा रहा है कोई उसे रोक नहीं सकता है। भाग्यवान हैं वो लोग जो इस सेवा में भाग ले रहे हैं। दुर्भाग्य है उनका जो यहाँ आकर भी सेवा में भाग नहीं ले रहे हैं। ये दरबार सबके साथ एक जैसा प्रेम करने का दरबार है। सब जातियों को इकट्ठा करने का दरबार है। अमृत का दरबार है। ईश्वर के खेल में किसी मनुष्य का कुछ नहीं चल सकता इस बात को दृढ़ करने का है। खेलते जाओ मेरा खेल, उसी के लिए आए हो। जो बेगरज है उन पर सब कुछ लुटा दूँगा। जो मतलबी है उनके हाथ खाक भी नहीं आएगी। जो मतलबी हैं वो अपनी करनी भोगने के लिए आगे चले जाएंगे। तू ही तू अमृत है। मैं ही मैं जहर है। इस बात को अच्छी तरह से समझने का है। जो तू ही तू के भास में रहता है वो स्वास-स्वास से अमृत पीता है। जिसमें मेरा पन, अपना पन रहता है वो जन्म मरण की बाजी हार जाता है। जब अपना पन उठाते हैं तब हमारा उद्धार नहीं होता है। ये सबसे उत्तम साधना है। अपने आप को मिटा देने की, खत्म कर देने की, एकता में रहने की, पूर्णता में सदा रहने की। अपने आप में समाना तभी होता है जब बहिरांग जगत में अपना कुछ भी नहीं रहता है। जब तब बहिरांग जगत् में अपना कुछ भी है, हम अंतरंग में समा नहीं सकते। गुम नहीं हो सकते। खेल करना है ईश्वर का, अपना खेल नहीं। किसी चीज़ में अपना पन नहीं लाना है। माँ की दया उसी को मिलती है जो बच्चा बन जाता है। अपने आप को सच्चे मन से चढ़ा देना है। फिर अपने लिए कुछ नहीं चाहना है। इच्छया की पूर्ति में सदा रहना है। **माँ का प्रचार करना तुम्हारा सबका परम धर्म है। ये प्रचार का दरबार है। इस बात को सबने दृढ़ करना है। यहाँ आकर धर्म प्रचार में भाग नहीं लिया तो हम फेल हो गए। इस सच्चाई को अच्छी तरह से समझने का है। करते जाओ सेवा जितनी भी कर सकते हो। पहुँचाते जाओ संदेश जीवों तक, जहाँ तक पहुँचा सकते हो, मेरे भिक्षु बनो। चार-छः भिक्षु बुद्धजी को मिले, दुनियाँ बदला दी। मुझे भी चार-छः भिक्षु तुममें से मिल जाएंगे तो देखो क्या होता है।** चलते जाओ जैसे मैं चलाते जाऊँ, करते जाओ

जैसे मैं कराते जाऊँ। निराश मत होवो।

ईश्वर का दरबार दया का दरबार है। दंड का दरबार नहीं है। यहीं आकर जीव धोखा खा जाते हैं। माँ का दरबार है, पोलीस का दरबार नहीं है। मॅजिस्ट्रेट का दरबार नहीं है। माँ के लिए सबका प्यार उठता है। मॅजिस्ट्रेट के लिए नहीं उठता। माँ के बन कर रहोगे तो माँ का इन्साफ मिलेगा। जितना कोई सरल स्वभाव होगा उतना ही भगवान की दया को पाएगा। मन में छल कपट आ गया, सब कुछ खो दिया। एक पक्का टेस्ट कैसा है। मेरे बच्चे के अंदर मैं बैठा हूँ। गुरु के अंदर मैं बैठा हूँ। यहाँ गुरु के अंदर मैं बैठा हूँ। जिसको गुरु की दया प्राप्त हो चुकी है उसको मेरी दया प्राप्त हो चुकी है। तुमको गुरु की खुशी प्राप्त हो चुकी है तो मेरी खुशी भी प्राप्त हो चुकी है। इस मुर्दे के अंदर केवल मैं हूँ केवल, केवल केवल मैं ही हूँ। यदि तुमको यहाँ से दया मिल रही है तो दया वहाँ से आ रही है जो इसके अंदर बैठा है। इस मुर्दे के अंदर बैठकर वो न्याय करता है। किसी के साथ अन्याय नहीं करता। पार वो ही होगा जिसको यहाँ से दया मिलेगी, इस मुर्दे में ईश्वर के सिवा कुछ है ही नहीं। जिसको आज भी जो कुछ मिल रहा है यहाँ से मिल रहा है और आगे भी जो कुछ मिलेगा वो यहीं से मिलेगा।

***'' जै मैय्या ''***

**साष्टाँग प्रणाम को उत्तम साधन जान।**
**साष्टाँग करने से जन का जाए तम अज्ञान।।**
**साष्टाँग प्रणाम से दूख दर्द सब जाएँ।**
**साष्टाँग प्रणाम से जीव शान्ति पाएँ।।**

**श्री साईं गीता ।।२१८६।।**

# श्री शिव महिमा

धन्य धन्य शिव शम्भू भोले
भक्तों के आधार।
धन्य धन्य गौरीपति
मैं वन्दऊँ बारम्बार।।

पवित्र पवित्र पवित्र प्रभु की लीला अपरम्पार।
पवित्र है हर की अमर कीर्ती करते वेद पुकार।।

निर्मल निर्मल निर्मल शिवजी अगम अजर अपार।
विचित्र विचित्र है हर की माया भूल रहा संसार।।

अमर अमर अमर हैं शंकर सर्गुण निर्गुणहार।
अमर है हर की अमर कीर्ती मैं जाऊँ सद् बलिहार।।

सुन्दर सुन्दर रूप मनोहर नन्दी पे अस्वार।
न्यारी न्यारी हर की शोभा दूख अमंगलहार।।

''ॐ श्री साई''

# शब्द ब्रह्म

**श्री साईं गीता व अमृत सागर इन दो ग्रंथों से मैंने सर्व जगत् का कल्याण करना है। समय आने पर ये दोनों ग्रंथ संसार के सबसे महान और पावन ग्रंथों में से माने जायेंगे क्योंकि ये सोयम् मेरे ही लिखाये हुये हैं। इसमें मेरा आशिर्वाद भरा हुआ है। आदि से अंत तक अमृत ही अमृत भरा हुआ है। जो भी प्राणी भाव से ये अमृत पिएंगे व पार हो जाएंगे। मेरी अनंत गोद को पा लेंगे।** मैंने जिन-जिन जीवों का उद्धार करना है उनको इस पावन ग्रंथ में इतनी रुचि दूँगी कि वो इसको एक पल के लिए भी छोड़ नहीं सकेंगे। दिन-रात उनका मन इसी में लगा रहेगा। इन दोनों में रुचि हो जाना माई की दया की निशानी है। ये दोनों ग्रंथ मेरी देन हैं। जो इनको मेरा प्रगट रूप समझ कर इनको अपनाएगा वो अवश्य ही मुझमें विलीन हो जाएगा। जो इस परम अमृत को पिएगा वो अवश्य ही पार हो जाएगा। इसमें भजन नहीं हैं परम पावन मंत्र हैं। ये मंत्र मैंने सत्युग में मनु जी को दिये थे और उनको आदेश दिया था कि इनका प्रचार करो वो संस्कृत के ग्रंथ अभी भी कहीं-कहीं हैं। उस वक्त संस्कृत भाषा थी। असंख्य जीव वो पढ़-पढ़कर तर गए। वो ही ग्रंथ मैंने फिर से हिन्दी भाषा में लिखाए हैं। खाली दूसरे ग्रंथ में राम-शंकर से साईं हो गया। है सब वो ही। इन दोनों ग्रंथों में मैंने पावन अमृत भरा है अपना पूरा रास्ता बता दिया। जो अपने आप को इन ग्रंथों की वाणी में गुम करेगा वो माँ की परम पावन आनंदमय गोद में गुम हो जायेगा। इन दोनों ग्रंथों से मैंने संसार को भयानक गड्ढों से निकालना है। ये कार्य शायद इस शरीर के ना रहने के बाद ये सभी दिशाओं में बिजली की तरह फैल जाएगा। घर-घर में पढ़े जायेंगे ये ग्रंथ, जैसे लोगों को इन ग्रंथों की अपार महिमा का पता लगेगा लाखों करोड़ों की गिनती में लोग पढ़ेंगे, लाखों-करोड़ों की गिनती में ये ग्रंथ छपेंगे, ये ही समझने की जरुरत है। मुझ में और वाणी में कुछ भेद

नहीं है। जो ज्योत जला कर इस वाणी का पारायण करेगा उसके अंदर प्रकाश हो जायेगा। जो अगरबत्ती जला कर पारायण करेगा उसके जीवन में सुगंधी आ जायेगी। जो सकाम भाव से पारायण करेगा उसकी सभी इच्छाएं पूरी हो जाएंगी परन्तु जो मेरे बच्चे निष्काम भाव से पारायण करेंगे, उनका तो कहना ही क्या है, उनको तो मैं अपनी अपार दया से अपनी परम गोद में ले लूँगा। अकाल पुरुष बाबा साईं का ग्रंथ है और अकाल शक्ति मात का ग्रंथ है, भेद नहीं है, दोनों एक माने जाएंगे। ये परम सेवा है जो मैं सोयम् आप कर रही हूँ। इस शरीर के अंदर मैं सोयम् आप ही हूँ। आँखे खोल कर देखो इस शरीर के अंदर से माँ बोलती हैं, भगवती बोलती हैं। अपने जीवन में लाओ ये ही तुम बच्चों को समझाना है।

इस शरीर के अंदर (श्री आनंद साईं जी के अंदर) माँ को देखो इस शरीर के अंदर माँ से contact में रहो। शरीर कभी भी जा सकता है। शरीर के अंदर जो माँ है वो यहीं रहेंगी। इस शरीर की सेवा का काम पूरा होने को आ रहा है। जब पूरण हो जायेगा शरीर छूट जायेगा। बच्चा माँ को कभी का पा चुका है, शरीर में रहने में उसे तकलीफ होती है। खाली सेवा के लिए उसे रखा है। सेवा पूरी हुई तो शरीर पाँच तत्त्व में मिल जाएगा। ज्योत-ज्योत में मिल जायेगी। अभी से मुझ परम ज्योत के साथ संबंध रखो। मिट्टी के पीछे मत जाओ ये ही आप सबको समझाना है। जब जीव मुझ में मिल कर एक हो जाता है फिर उसको थोड़ी देर अलग होने में भी तकलीफ होती है। अभी मैं इसके साथ ज्यादती करती हूँ। ये मुझमें मिल कर एक हो चुका है। अभी भी मैं इसकी इच्छा के खिलाफ रहती हूँ ये तंग होता है परन्तु मैं इसको अपनी आनंदमय गोद से अलग ना करूँ तो सेवा का काम नहीं हो सकता। मुझे बार-बार इसकी मर्जी के खिलाफ इसे अलग करना पड़ता है। जब ये बाहर आ जाता है तो मुझे भी सूना-सूना लगता है। पर लाखों-करोड़ों जीवों के लिये करना पड़ता है। ये भी दु:खी होता है, रोता है माँ मुझे अलग मत करो। मुझसे सहन नहीं होता इसीलिए किसी भी दिन मैं इसको अपनी आनंदमय गोद मे ले लूँगी। मैं भी नहीं रह सकती इसके बिना परन्तु

सेवा भी जरुरी है। ये सेवा परम प्रकाश की तरफ बढ़नी शुरु हो गई है। कोटि सूर्यों के समान चमकेगी। तुम बच्चे भाग्यवान हो तुम्हें मेरे इस रूप का संग मिल रहा है। जिसको भी इस रूप का संग मैं दूँगी उनके जीवन को मैं उठा लूँगी। ये मेरे बच्चे का रूप है। बहुत प्रिय रूप है, पावन रूप है, पतित पावन रूप है। इस पावन रूप के निहारने मात्र से जीव तर जायेंगे। अभी जगत् इसको नहीं समझ रहा है, एक दिन समझेगा। जब ये शरीर चले जाएगा। तब सबको समझ आएगी। मेरी भक्ति करते जाओ इन ग्रंथों का आसरा लेकर। मेरे को जो कुछ भी देना है इन ग्रंथों से ही देना है। बार-बार इन ग्रंथों में रम जाओ इन ग्रंथों के बाहर कुछ नहीं मिलेगा।

*'' जै मैय्या ''*

**जो भी प्राणी पाप कमाई पीछे छोड़ के जाए।**
**पीछे वालों से भी फिर वो उल्टे कर्म कराए।।**
**पाप कमाई जिस जा जाए उस जा करे बिगाड़।**
**पाप कमाई आगे जा के लाए दुख की बाढ़।।**
**श्री साईं गीता ।।२३२२।।**

**हवन करने से हे साधो कर्मों की गति होवै शांत।**
**स्वाहा स्वाहा करते करते प्रसन्न होते हैं श्रीकांत।।**
**अपने इष्ट मंत्र के साथ प्रतिदिन हवन करो।**
**इष्ट देव के चरण कमल हृदय माहीं धरो।।**
**श्री साईं गीता ।।२३१०।।**

# विश्वास

**साईं राधे गोविन्द,**
**साईं राधे गोविन्द।**

नाम का आधार छोड़ना नहीं चाहिए। जहाँ अहंकार होता है बस वहीं सब कुछ खत्म हो जाता है फिर नए सिरे से चौरासी में डाले जाते हैं। संसार में सबसे सुन्दर स्थिति बच्चे की है। जिसमें अहम का नाम ही नहीं होता वो जानता है एक माँ है और एक माँ का खेल है। न मैं कुछ हूँ न मेरा खेल। The child is the apex of the creation that is the Pre Nirvana stage. जहाँ मैं हूँ वहाँ माँ नहीं है। बच्चे में मैं नहीं है। बच्चे में मेरा पन नहीं है। माँ का खेल हो रहा है, माँ जानती हैं, मैं क्या जानूँ, यही भाव चौबीसों घण्टे बना रहता है। लाख जतन कर लो जब तक बच्चा नहीं बनोगे माँ को पा नहीं सकते। बच्चा माँ के आसरे रहता है। एक माँ का आधार, केवल माँ का आधार। बच्चे का सारा समय स्वाभाविक ही माँ की याद में गुजरता है। एक बच्चे को न कुछ चाहिए होता है, न वो कुछ माँगता है। **साईं राधे गोविन्द, साईं राधे गोविन्द** बहुत मधुर धुन की आवाज आ रही है।

जब तक अहम नहीं जाता है अपनी-अपनी करनी पर कड़ी नज़र रखने की जरुरत है। जो आँख बन्द करके, गुरु के वचनों पर विश्वास रखता है वो सीधा पार हो जाता है। गुरु के वचनों में से अमृत टपकता दिख रहा है। एक-एक शब्द में से अमृत टपकता दिख रहा है। एक-एक शब्द अमृत सिन्धु में से आता है, जीवों को अमृत पिलाता है। बच्चा केवल माँ की गोद में खेलना जानता है उससे ज्यादा कुछ नहीं। जो सच्चे मन से माँ के अर्पित हो जाता है वो पार हो जाता है। ये शब्द, ये वाणी सुनने के लिए बड़े से बड़े देवी देवता भी तरसते हैं, गुरु रूप से ईश्वरीय वाणी निकलती है। कोटि कोटांग जीवों को प्रकाश देती है। पूर्ण के खेल में दूसरे की जगह नहीं होती दूसरा आ जाता है तो पूर्ण का खेल नहीं रहता। **ये प्रचार का दरबार है मैंने सर्व जगत् को गड्ढे से निकालना है प्रचार के द्वारा।**

***'' जै मैय्या ''***

ईश्वर की पूरी रचना में कोई एक भी ऐसा जीव नहीं है जो कर्मों की गति से बच सके इसीलिए हर कर्म देख कर करना, भले अभी कष्ट भी उठाना पड़े। सच्चाई में चलने के लिए कभी भी गलत कर्म नहीं करना। जो सच्चे मन से मेरे हो चुके हैं उनके हर कर्म मैं करता हूँ। वो कर्मों में अपनापन लाते नहीं। मेरा खेल समझ कर जीवन व्यतीत करते हैं अपनापन नहीं लाते। जहाँ हम हैं वहाँ क्या कम है। कर्म भोगना मानव का धर्म है। अपने कर्म खुशी से भोगना उससे भगवान की प्रसन्नता मिलती है। कर्म भोगते जो खुश नहीं होता वो कभी भगवान को पा नहीं सकता। अपने इष्ट को कभी भूलो नहीं। कर्म भोगते अपने इष्ट को याद करते हैं तो कर्म थोड़े-थोड़े में पूरा होता है। नाम लेने से भी वातावरण शुद्ध होता है। जहाँ हरि का नाम हो रहा है वहाँ से दूषित वातावरण शुद्ध होते जा रहा है। मालिक की खुशी पाना है तो मालिक की इच्छा में रहो, अपनी मर्जी नहीं चलाना। परमेश्वर के विधान में सबकी जगह है परन्तु गुरु द्रोही की कोई जगह नहीं है। बच्चे में माँ है, माँ में बच्चा है। गुरु के कार्य में जो बाधा डालता है वो ईश्वरीय कार्य में बाधा डालता है, वो घोर गति को प्राप्त होता है। तुम्हारे गुरु दिन-रात सर्वत के भले की ही सोचते हैं यदि हम अपनी करनी से गुरु को धक्का पहुँचाते हैं तो हम दोषी हैं, गुरु के पास आए हो तो खुला दिल रखो। गुरु की इच्छा ही मेरी इच्छा है। मेरी इच्छा ही गुरु के अंदर से प्रगट होती है। गुरु दरबार में आकर जो छोटी-छोटी बातें बीच में लाता है वो बर्बाद हो जाता है, जो सेवा किसी को मिलती है उसने उसको सरअंजाम देना चाहिए, सुस्ती नहीं करनी चाहिए। गुरु सेवा हरि की सेवा है। गुरु सेवा गुरु के शरीर की सेवा नहीं है लोग गल्ती से गुरु के शरीर की सेवा को गुरु सेवा मान लेते हैं, भूले जीव हैं। गुरु के शरीर को मैं ज्यादा महत्त्व नहीं देता अगर गुरु के शरीर की सेवा को मैं ज्यादा महत्त्व दूँगा तो मैं अपनी

वाणी को झूठा कर रहा हूँ। ये वाणी उठाकर फिर फेंक दो ये वाणी लिखने की जरुरत नहीं है। **सर्व जगत् के हित के लिए गुरु जगत् में आते हैं अपने किसी हित के लिए नहीं, दो-चार के हित के लिए नहीं, सर्वत्र के हित के लिए। जगत् की सेवा के लिए हमने गुरु पद बनाया है बड़ा बनने के लिए नहीं।**

*'' जै मैय्या ''*

अनमोल थी घड़ी वो जब शरण तेरी आया।
मैं थक चुका था चलते तू ने मुझे बुलाया।।
तेरे चरण कमल से भावी ने है मिलाया।
होनी हुई साईं की बालक ने माँ को पाया।।
श्री साईं गीता ।।२२६१।।

आत्महत्या के समान पाप न दूजा कोये।
कर्म भोग से भाग कर लाख बरस तक रोये।।
अपनी करनी भोग के निर्मल होवे जन।
मीठा मानै हुक्म को शान्त होए तन मन।।
श्री साईं गीता ।।२१८३।।

आस पास के लोगों से सदा ही राखो प्यार।
खट्टी मीठी सुन लो सब की मीठा करो व्यवहार।।
कड़वी बानी बोलो नाहीं सब में इक करूतार।
भजन करो दिन रात्री एक साईं आधार।।
श्री साईं गीता ।।१९०१।।

# मार्गदर्शन

रक्षा उसी की होती है जो सच्चे मन से अर्पित हो जाता है। जो वासनाओं का गुलाम है उसको करनी भोगनी ही पड़ती है। जो सच्चे मन से मेरे हो जाते हैं वासनाओं को छोड़कर उनकी रक्षा करना मेरा काम है। सदा माँ के बन कर रहो माया के कभी नहीं बनो इसी में जीवन की जीत या हार है। अर्पित होकर रहना मतलब भगवान की इच्छा में रहना। अपराध उसी से होते हैं जो इच्छया में नहीं रहता, जो इच्छया में रहता है उससे अपराध नहीं हो सकते। अर्पित होकर नाम लेते जाओ बिगड़ी बन जाएगी, अर्पित न होने से बिगड़ी नहीं बन सकती।

जो नगद नारायण को छोड़कर नाम नारायण का आसरा लेता है उसको भरपूर दया मिलती है। दया पाने का और सुन्दर रास्ता मैं नहीं जानता। भाव भरे मन से पुकारते रहो, प्रचार के काम में मेरा हाथ बटाते रहो, ईश्वर का खेल होकर ही रहता है। समय पा कर हजारों लाखों लोग इस सेवा के लिए तैयार होने वाले हैं। मेरा क्या है मैं आज ही खड़े कर दूँगा। भगवान भोलेनाथ उन्हीं पर दयाल होते हैं जो अपना आप मिटा कर सेवा में लग जाते हैं। जो अपना आप मिटा कर सेवा करते हैं वो ही एकता और पूर्णता में रह सकते हैं, उस एक पूर्ण की दया से। रास्ता साफ है, इच्छया में रहो सेवा को अपनाओ पार हो जाओगे। सत् संकल्प ईश्वर सबका हित चाहते हैं। सभी देवी-देवता पूरण परमेश्वर का रूप हैं। किसी भी रास्ते से आओ आखिर में वहीं आना होता है।

माँ के भजन के बिना जीव मेरी दया को कभी पा ही नहीं सकता। माँ के भजन के बिना जीव अमृत नहीं पी सकता। भगवती की दया के बिना जीव की बात बनती ही नहीं है। जो अपनी बहु और अपनी बच्ची में फरक करते हैं वो घोर नरक को प्राप्त करते हैं। कंजको की सेवा करना ही भगवती की सेवा करना है। इस भयानक राक्षस के खिलाफ आवाज उठाओ। प्रचार करो जितना भी कर सकते हो। क्रोध जीव का सबसे बड़ा दुश्मन है। क्रोध में आकर जीव अनर्थ कर देता है फिर लाखों जन्म भोगता फिरता है। अपने पवित्र व्यवहार से दूसरों के

मन को जीत लेना चाहिए। कोई भी हमारे पास आए हँसता-खेलता जाना चाहिए। प्रसन्न वो ही रह सकता है जो निर्वासना है। सदा सर्वदा ईश्वरीय इच्छा में रहो, ईश्वर की इच्छया का पालन करते जाओ और आगे आशीर्वाद का हाथ दिखा रहे हैं। सेवा के कार्य में किसी ने ढील नहीं करना है। अपने अंदर जागृति लाओ दूसरो के लिए जीने की। त्याग और वैराग में सब कुछ मिलता है। सारे जगत् में इस समय हा-हाकार मचा हुआ है, झूठ-छल, कपट, फरेब का राज है भगत लोग हाथ उठा-उठाकर पुकार कर रहे हैं – हे ईश्वर इस जगत् को बचाओ। लग जाओ सेवा में ढीले मत पड़ो।

*'' जै मैय्या ''*

**जो चाहे सुख शान्ति औरों का कर भला।**
**सब की ले आशीर्वाद दूर होए सब ही बला।।**
श्री साईं गीता ।।२४२३।।

**साईं शरण में रहो निरंतर सदा करो साईं गुणवाद।।**
**बहुत करम धुल जाते हैं साईं शरण लेने के बाद।।**
श्री साईं गीता ।।२४१४।।

**गाली बदले गाली देत सब कुछ देवै खोए।।**
**गाली को जो सहन करे सो जन पावै मोहे।।**
श्री साईं गीता ।।२४०३।।

**भांति भांति के मत मतांत सब को भरम भुलाए।।**
**साईं आयो जगत् में सब में एक दिखाए।।**
श्री साईं गीता ।।२२९५।।

# परदुःख

जीवन जब तक शुद्ध नहीं होगा बात बनेगी कैसे। जब तक हमारी बहनों पर हमदर्दी नहीं है तब तक अध्यातम् की चर्चा करना फिजुल है। इस बात को अच्छी तरह से समझने का है। घर में बूढ़े माता-पिता दुःखी हो रहे हैं, लड़कियों को टॉर्चर कर रहे हैं, बहुत हमले करके आए फिर माला घुमाना शुरु कर देते हैं, ये माला किस काम की। इन खौफनाक जीवों को, इन दरिन्दों को मैं घोर से घोर नर्क में डाल कर छोडूँगा। जो दूसरों के दुःख को देख कर दुःखी नहीं होता अपना ही सुख चाहता है, ऐसा जीव नाकारा है। तुम अपना पार्ट अदा करो मैं अपना पार्ट अदा करूँगा। राम नाम उसी की मदद करता है जिसके मन में दूसरों के लिए दया भरी है। लग जाओ सत् सेवा में तुमको चैन नहीं आना चाहिए। शिव का अर्थ ही है कल्याणकारी। श्रावण का महिना शुरु हो रहा है सब पूजा के लिए जाते हैं, जो सब जीवों का कल्याण करता है वो ही शिव है। जो दूसरों की सेवा में अपना जीवन व्यतीत करता है उसी की सच्ची शिव पूजा हो रही है। करो सेवा मुश्किलें आएँगी फिर भी सेवा करते जाओ। एक एक स्टीकर लगाने की जरुरत है। मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। **जिधर देखो दुःख ही दुःख है यदि आप लोगों को दूसरों का दुःख, दुःख नहीं लगता तो माला घुमाना बेकार है।** जहाँ दुःख है वहाँ दुःख दूर करने की कोशिश करो। लोगों की बुद्धियों को ठीक करना है झूठ, छल, कपट, फरेब खतम हो इसीलिए मैंने साईं गीता बनायी है। दया भाव मन में रखना ये ही समझने की चीज़ है। **जब तक तुम्हारा मन दूसरों का दुःख-दर्द देखकर पसीजता नहीं तब तक तुम मुझे पा नहीं सकते।**

सारा जीवन कम से कम में गुजरान करना है। बाकी जरुरतमंद को देना, ज़खीरा नहीं करना, दूसरों को भी कमाने का हक देना। संगत बहुत देखकर करना। करोड़पति की संगत शेर का मुँह दिखा रहे हैं, खा जाएगा। बड़े-बड़े संतों को

करोड़पति खा गए। संगत करना तो दीन लोगों से करना, जो सादगी और सच्चाई में रहता है। मन तो मन ही है उस शेर की संगत किया तो तुम भी शेर की तरह हो जाओगे। दूसरों का खून पीने में तुमको मज़ा आएगा। इन बातों को समझने की बड़ी भारी जरुरत है। शिर्डी में बैठे हैं, दुनियाँ आती है सब कोई माँगता है देते जा रहे हैं। कोई लाखों-करोड़ों माँग रहा है, कोई बीमारियाँ दूर करवा रहा है, कोई मुकदमों के लिए पुकार कर रहा है, कोई शादियों के लिए पुकार कर रहा है, कोई बाल-बच्चे माँगता है, देते जा रहे हैं सबको ले, ले, ले। फकीर को तो फकीर का बच्चा होना। अमीर के सामने टुकड़ा डाल देता हूँ, टुकड़े में ही वो खुश हो जाता है। फकीर को फकीर का बच्चा चाहिए। फकीर को फकीरी के सिवाय कुछ नहीं चाहिए। अब जानते हो अर्पित जीवन क्यों कहता हूँ जो फकीरी चाहता है वो ही मुझे चाहता है। जो टुकड़े माँगता है उसके सामने टुकड़े डाल दिए जाते हैं। ठीक है दो-चार-दस जन्म टुकड़े देते रहेंगे कभी तो मन भरेगा, इस सच्चाई को अच्छी तरह से समझना है। फकीर का बच्चा फकीरी में रहता है। कम से कम, कम से कम, कम से कम। कम से कम अपनी जरुरतें रखता है, बस उससे ज्यादा नहीं। फकीर दूसरों की खिद्मत में लगे रहता है।

**सर्वत का भला सोचना चाहिए। अपने लिए नहीं जीना, सर्वत के भले के लिए जीना चाहिए। तुम यदि दूसरों के लिए जी रहे हो तो तुम्हारा आना सफल है। दीन दुखियों की तरफ से आँख बन्द किए हुये हैं तो हमारा आना सफल नहीं है।** उन माता-पिता की क्या हालत हो रही है जिनकी बच्चियों पर अत्याचार हो रहे हैं। जो आँख बन्द करके बैठे हैं वो अपने नहीं हैं तो उनका क्या होगा? बहुत बड़ा छल है कपट है बहुत बड़ी दुविधा है। माँ की सेवा माँ की बच्चियों की सेवा है, माँ की सेवा स्त्री जाति की सेवा है। हर स्त्री माँ का रूप है। हर स्त्री हमारी माँ है। ये ही जगत् माता का संदेश है।

***'' जै मैय्या ''***

# PATH ETERNAL

**GURU OM**

The richest man in the world is he who aspires for nothing. One who aspires for nothing gets everything. One who aspires for nothing is not hankering after perishable worldly objects. To aspire for the Ideal, for the Imperishable, for the Eternal is the aim of life. To hanker after transitory things of life brings pain in the long run. If you want

to have a carefree life, give comfort to others. **Service to mankind in any form pleases the Lord. Rendering selfless service gives others joy and grace and we become blissful also.** To be joyous at all times is our birthright because the essential quality of the Atman is joy. Atman is *Anandswaroop*. Dwell in the source within. Never leave the source. The source is resplendent, lustrous, joyful. Do not hanker after ephemeral things of life which give temporary pleasures

but invariably end in pain. **My children are messengers of Truth. They carry the message of Truth to suffering humanity. I abide in that message. Give that message to one and all. Let the barriers of caste and creed breakdown.**

The Creator is in the Creation. Love the Creator through His Creation by selfless service. Give love. Receive love. Give hatred and receive hatred in return. I am the Saviour. He who surrenders to Me wholeheartedly is fully protected. When you leave My Lotus Feet you are protection-less. None but God can give protection.

**हे बाबा, इस इतने बड़े जगत में, तेरे सिवा मेरा है ही कौन।**

Pray fervently with these words and I shall stand by you in peril. Be humble. Reduce yourself to the dust and I shall save you. There is joy in treading the Path Eternal. The travellers who have already treaded the path of Truth are beckoning to us to be steadfast in our devotion to the Lord, to remember Him with every breath. I come to the help of those who sincerely and honestly want to tread on the Path of truth. I give them all help, all guidance to enable them to reach their true Home. Out of nothingness we have come. Into nothingness we shall go. Nothingness is everythingness. Nothingness is joy. Merge into nothingness and you are beyond the reach of death.

This is the call from the Beyond. Hearken to this call. Do not become anything. Just be and the cage shall be broken. You will merge in Immortality, in Perennial Joy, in Eternal Bliss. That is the message.

***"Jai Maiya"***

***OM SAI SRI SAI JAI SRI SAI. OM SAI SRI SAI JAI SRI SAI.***
***OM SAI SRI SAI JAI SRI SAI. OM SAI SRI SAI JAI SRI SAI.***

# GLORY OF RAMA NAMA

***''Om Sai Ram''***

1. **Rama Nama is the most potent and powerful *sadhana* in this *Kali Yuga*.**
2. **Rama Nama is a panacea for all ills of life.**
3. **Rama Nama is *Maha-Aushdhi.* It is the most effective medicine for all ailments, physical, mental and spiritual.**
4. **Rama Nama is a wonderful Divine soap. It cleanses all the impurities of the mind.**
5. **Rama Nama is the greatest Talisman it works wonders in transforming the inner and outer life of the aspirant.**
6. **Rama Nama is the father of Divine love. It fosters the love for the Divinity spontaneously.**
7. **Rama Nama is the Commander in-Chief of all the Godly Forces. It destroys completely all the evil *Vritties.***
8. **Rama Nama is the greatest redeemer. It is a heaven for the sinners and the last refuge for the fallen.**
9. **Rama Nama is the most powerful powder magazine. It blasts completely all selfishness and petty worldliness. It conquers the lower self completely.**

10. **Rama Nama is a most marvellous healing balm which sooths and eventually heals the deep wounds of hatred, anger, lust, greed and pride.**
11. **Rama Nama is harbinger of all auspiciousness. It imparts bliss, peace, happiness, contentment and joy.**
12. **Rama Nama is the most mysterious spiritual force. It purifies the *Antahkaran* quickly.**
13. **Rama Nama is *TAARAK MAHA MANTRA*. Those who take Rama Nama with faith and devotion cross the ocean of life and death with utmost ease.**
14. **Rama Nama is an unrivalled Saviour. Since the dawn of Creation, it has saved millions from the clutches of *Maya*.**
15. **Rama Nama thrills the soul and unites it with the Supreme Lord.**
16. **Rama Nama makes one desireless, greedless, angerless and egoless.**
17. **Rama Nama makes one humble, loving, kind and truthful.**
18. **Rama Nama is a Divine nectar. Those, who drink it earn immortality.**
19. **Rama Nama brings about the ecstatic rememberance of the Lord at all times.**

***"Om Sri Sai."***

# आनंद दो आनंदा आनंदा आनंदा

कितना सार्थक नाम है, कितना सार्थक रूप है। चारों ओर आनंद ही आनंद छा जाता है जब ये धुनि होती है।

क्या लिखूँ? मैं बिल्कुल अन्जान हूँ। मुझे तो अपने परम पूज्य पापा के सिवाय कुछ भी याद नहीं, कुछ भी समझ नहीं। यूँ तो बचपन में ही परम पूज्य गुरु महाराज ने अपनी शरण में लिया था। जिस उम्र में सब लोग दुनिया के मौज-मजे में रहते हैं, संसारिक चीज़ों के शौक बढ़ते हैं, उस उम्र में हमें सुबह-शाम श्री गुरु चरणों में दरबार जाने के सिवाय कुछ और सूझता ही नहीं था। जाने कैसे उनके श्री चरणों में रहते हुए बड़ी हो गई और फिर वही दुनिया की रीत, शादी हो गई। ससुराल नागपुर में ही था। मायके से जाने का दु:ख हर लड़की को होता ही है, परन्तु अपने प्यारे पापा, प्यारी माँ और दरबार से दूर होने का दु:ख कुछ ज्यादा ही था। प्यारे गुरुदेव की दया से घर-बार सब अच्छा मिला, संसारिक जीवन की हर खुशी मिली। हाँ दरबार का रोज का संग छूट गया। फिर भी कभी-कभी जाती थी दरबार, तब ऐसा लगता था समय रुक जाए, वक्त की धारा थम जाए और मैं अपने सत्गुरु के दर्शन करती चली जाऊँ टिकटिकी लगाकर। इतना प्यारा सुंदर रूप कभी आँखों से ओझल ना हो।

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। गुरु कृपा ही केवलम्।।

परम् पूज्य पापा जी का सत् स्वरूप वास्तव में शिव रूप है, अत्यंत सुंदर, अत्यंत मोहक। उनकी अमृत वाणी इन्सान को अन्दर तक झिंझोड़ कर रख देती है। उनकी पहिचान मात्र उनकी दया से ही सम्भव है। गुरु महाराज अंतरयामी होते हैं इसलिए हर समस्या का समाधान उनके सामने जाते ही हो जाता है। उन्हें कुछ कहने की, कुछ बताने की जरुरत ही नहीं पड़ती।

मुझे तो सत्गुरु के सुंदर, मनोहर रूप के सिवाय ना कुछ सूझता है, ना दिखता है। हर पल, हर घड़ी अपने ऊपर उनकी रक्षा का हाथ महसूस होता है। अपने प्यारे पापा तथा गुरु माता के चरणों में यही प्रार्थना है कि उनकी दया बनी रहे। उनकी दया के बिना और कुछ भी नहीं चाहिए। बस यही शब्द निकलते हैं – हर स्थिति में, हर हाल में तेरी इच्छा पूर्ण हो। सत्गुरु श्री आनंद साईं जी के चरण-कमलों में कोटि-कोटांग प्रणाम हैं और यही प्रार्थना करती हूँ सदा अपनी छत्रछाया में रखें, हमारी गल्तियों को क्षमा करें। हे माँ दया, कृपा, क्षमा।

*– संतोष हिंगल,* नागपुर

Few days back I read the following matter somewhere. I liked it so much that I am sharing it with you all.

From his childhood, Uddhava had been with Krishna, charioting Him and serving Him in many ways. He never asked for any wish or boon from Sri Krishna.

When Krishna was at the verge of completing His *Avatar*, He called Uddhava and said, 'Dear Uddhava, in this *avatar* of mine, many people have asked and received boons from me; but you never asked me anything. Why don't you ask something now? I will give you.'

Even though Uddhava did not ask anything for himself, he had been observing Krishna from His childhood. he had always wondered about the apparent disconnect between Krishna's teachings and actions, and wanted to understand the reasons for the same.

He asked Krishna, 'Lord, you taught us to live in one way, but you lived in a different way.In the drama of Mahabharat, in the role you played, in your actions, I did not understand many things. I am curious to understand the reasons for your actions. Would you fulfil my desire to know?'

Krishna said, 'Uddhava, what I told Arjuna during the war of Kuruksheta was Bhagavad Gita. Today, My responses to you would be known as 'Uddhava Gita'. This is why I gave this opportunity to you. Please ask without hesitation.'

Uddhava starts asking – 'Krishna, first tell me who is a real friend?'

Krishna says, 'The real friend is one who comes to the help of his friend in need even without being called'.

Uddhava – 'Krishna, You were a dear friend of the Pandavas. They trusted you fully as *Apadhbhandava* (protector from all difficulties). Krishna, You not only know what is happening, but You know what is going to happen. You are a great *gyani*. Just now you gave the definition of a true, close friend. Then why did you not act as per that definition. Why did you not stop Dharmaraj (Yudhishtra) from playing the gambling game? Ok, you did not do it; why did you not turn the luck in favour of Dharmaraj,

by which you would have ensured that *dharma* wins. You did not do that also. You could have at least saved Dharmaraj by stopping the game after he lost his wealth, country and himself. You could have released him from the punishment for gambling. Or, you could have entered the hall when he started betting his brothers. You did not do that either. At least when Duryodhana tempted Dharmaraj by offering to return everything lost if he betted Draupadi (who always brought good fortune to Pandavas), you could have intervened and with your Divine Power you could have made the dices roll in a way that is favourable to Dharmaraj.

Instead, You intervened only when Draupadi almost lost her modesty and now you claim that you gave clothes and saved Draupadi's modesty; how can you even claim this – after her being dragged into the hall by a man and disrobed in front of so many people, what modesty is left for a woman? What have you saved? Only when you help a person at the time of crisis, can you be called *Apadhbandhava*.

If you did not help in the time of crisis, what is the use? Is it *Dharma*?' As Uddhava posed these questions, tears started rolling from his eyes.

These are not the questions of Uddhava alone. All of us who have read Mahabharata have these questions. On behalf of us, Uddhava had already asked Krishna.

*Bhagavan* Krishna laughed. 'Dear Uddhava, the law of this world is : 'only the one who has viveka (intelligence through discrimination), wins'. While Duryodhana had viveka, Dharmaraj lacked it, That is why Dharmaraj lost.' Uddhava was lost and confused. Krishna continues 'While Duryodhana had lots of money and wealth to gamble, he did not know how to play the game of dice. That is why he used his Uncle Shakuni to play the game while he betted. That is *viveka*. Dharmaraj also could have thought similarly and offered that I, his cousin, would play on his behalf. If Shakuni and I had played the game of dice, who did you think would have won? Can he roll the numbers I am calling or would I roll the numbers he is asking. Forget this. I can forgive the fact that he forgot to include Me in the game. But, without *viveka*, he did another blunder.He prayed that I should not come to the hall as he did not want me to know that through ill-fate he was

compelled to play this game. he tied Me with his prayers and did not allow Me to get into the hall; I was just outside the hall waiting for someone to call Me through their prayers.

Even when Bheema, Arujuna, Nakula and Sahadeva were lost, they were only cursing Duryodhana and brooding over their fate; they forgot to call Me. Even Draupadi did not call Me when Dusshasan held her hair and dragged her to fulfil his brother's order. She was also arguing in the hall, based on her own abilities. She never called Me. Finally good sense prevailed; when Dusshasan started disrobing her, she gave up depending on her own strength, and started shouting 'Hari, Hari, Abhayam Krishna, Abhayam' and shouted for Me. Only then I got an opportunity to save her modesty. I reached as soon as I was called. I saved her modesty. What is my mistake in this situation?

'Wonderful explanation, Kanha, I am impressed. However, I am not deceived. Can I ask you another question', says Uddhava. Krishna gives him the permission to proceed.

'Does it mean that you will come only when you are called! Will You not come on Your own to help people in crisis, to establish justice?' asks Uddhava.

Krishna smiles. 'Uddhava, in this life everyone's life proceeds based on their own *karma.* I don't run it; I don't interfere in it. I am only a 'witness'. I stand close to you and keep observing whatever is happening. This is God's Dharma'.

'Wow, very good Krishna. In that case, you will stand close to us, observe all our evil acts; as we keep committing more and more sins, you will keep watching us. You want us to commit more blunders, accumulate sins and suffer', says Uddhava.

Krishna says, 'Uddhava, please realise the deeper meaning of your statements.

**When you understand & realise that I am standing as witness next to you, how could you do anything wrong or bad. You definitely cannot do anything wrong or bad. You definitely cannot do anything bad. You**

**forget this and think that you can do things without my knowledge. That is when you get into trouble.**

Dharmaraj's ignorance was that he thought he can play the game of gambling without My knowledge. If Dharmaraj had realized that I am always present with everyone in the form of *Sakshi* (witness), then wouldn't the game have finished differently?'

Uddhava was spellbound and got overwhelmed by *Bhakti*. He said 'What a deep philosophy. What a great truth! Even praying and doing pooja to God and calling Him for help are nothing but our feeling / belief. When we start believing that nothing moves without Him, how can we not feel his presence as Witness? How can we forget this and act? Throughout Bhagavad Gita, this is the philosophy Krishna imparted to Arjuna. He was the charioteer as well as guide for Arjuna, but He did not fight on his own.' – Realize that Ultimate *Sakshi* / Witnesser within & without you! And Merge in that God-Consciousness! Discover Thy Higher Self – The Pure Loveful & Blissful Supreme Consciousness .....

***– Unknown***

## श्रद्धांजली

**प्राणप्यारे गुरुदेव श्री आनंद साईं जी की प्रिय आत्मा, हमारे गुरुपरिवार की वयोवृद्ध आदरणीय गुरुबहन श्रीमती बलिदेवी चाचरा अपना पंचतत्त्व शरीर त्याग कर सदा-सदा के लिए श्री गुरु चरणों में दिनांक २९ फरवरी २०१६ को समा गईं। गुरु प्रेम में विभोर होकर उन्होंने कई भजन कलमबद्ध किए। उनका श्री गुरु चरणों में अगाध प्रेम व सेवा भाव हमें सदा प्रेरणा देता रहेगा। ऐसी परम पवित्र आत्मा को हम श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। हमारी श्री गुरुदेव से विनम्र प्रार्थना है कि उनके परिवार जनों को शांति बख्शें।**

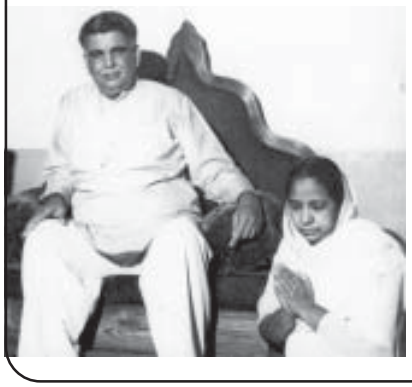

# अमृत प्याला

आनंद साईं नाम अमृत प्याला।
पीवे इसको करमा वाला।
आनंद साईं नाम सुखदाई।
इसकी महिमा कही न जाई।।

जिसने पिया ये नाम का प्याला।
व्यापे नाहीं माया का जंजाला।।

आनंद साईं आनंद साईं ध्याओ।
बिगड़ी अपनी बात बनाओ।।

इस नाम की महिमा न्यारी।
अपने जन को करे सुखारी।।

आनंद साईं के गुण गाओ।
डुबती नैय्या पार लगाओ।।

आनंद साईं जै आनंद साईं।
इनके जैसा कोऊ नाहीं।।

सब मिल बोलो बारम्बार।
आनंद साईं की जै जैकार।।

बोलो जै जै दाता आनंद साईं। जै जै जै गुरु माते माई।।

*– अन्जान*

---

तू जो चाहे तो उजड़े गुलशन में
लौटकर फिर बहार आ जाए।
खाक में मिलती ज़िन्दगानी में
हाय फिर से निखार आ जाए।।

तू जो चाहे तो मोड़ सकता है
रुख उमड़ते हुए तूफानों का।
तू तो मालिक है सारी कुदरत का
इन ज़मिनों का आसमानों का।।

अपनी आंखों में ले के हसरत के
इल्तज़ा करता हूँ लिए आंसू।
तेरे दीदार से मेरी रुह को
हाय कितना करार आ जाए।।

ज़िंदगी मौत तेरे बस में है
तेरी रहमत से फूल खिलते हैं।
कोई गर्दिश नहीं सिवा तेरे
क्या कहीं मुर्दे खुद भी हिलते हैं।।

नूर खुशियाँ सितारे चांद सभी
इन में कुछ भी नहीं सिवा तेरे।
खुशनसीबी भी उनके रश्क करे
तुझको जिस जिस पे प्यार आ जाए।।

*– तिलकराज थापर*

---

## अप्रैल 2016 से जुलाई 2016 तक आनेवाले महत्वपूर्ण पर्व -

**08** अप्रैल – गुढी पाडवा (नवरात्रारंभ)
**13** अप्रैल – बैसाखी
**14** अप्रैल – दुर्गा अष्टमी
**15** अप्रैल – रामनवमी
**22** अप्रैल – हनुमान जयंती

**1** मई – अक्षयतृतीया
**20** मई – श्री नरसिंह जयंती
**21** मई – श्री बुद्ध पूर्णिमा
**5** जून – वटसावित्री पूजा
**14** जून – सी गंगा जयंती
**19** जुलाई – श्री गुरु पूजा

## FOCUS ON THE
# ENLIGHTENED PATH

**''Om Sri Sainathai Namah''**

- ★ **Om Sri Sai Ganeshai Namah.**
- ★ **The most sublime life is one, that brings joy in other's lives.**
- ★ **Meditate on the Lustrous Light of awareness.**
- ★ **Talking ill of others, brings about physical and mental sufferings.**
- ★ **One does not have to do things. These just happen.**
- ★ **Simple life, few wants and honest earnings – without these basic qualities, you can never attain God.**
- ★ **The discovery of your own subjective self leads to Eternal Liberation.**
- ★ **Do not worry, let the karma exhaust itself.**
- ★ **Meditation is dwelling intensely in the present.**
- ★ **Destiny is changed by complete, total, self-surrender.**
- ★ **The deeper you go into your being, the more you become aware of Inner Light.**
- ★ **The Divine Name brings cheer in drooping minds.**
- ★ **Go deeper and deeper into the rock-bottom of your being. You shall find an ineffable bliss.**

# साईं अमृत संदेश
**SAI AMRIT SANDESH**

**QUARTERLY MAGAZINE**

**April – 2016**

*2nd Edition*

*Published by :*
**SAI PUBLICATIONS**
Sri Anand Sai Marg
Besides Ananda Apts.
Clarke Town,
NAGPUR-440 004.(M.S.)
Ph.No. 6574825
Cell : 9823134765
*e-mail :*
*saipublications@rediffmail.com*
*Website : saigita.org*

***Our Inspiration :***
**Sri Anand Sai**

*Edited by :*
**Jagdeep Bhandari**

**SUBSCRIPTION :**
**Life (25 Years) : Rs. 1500/-**
**5 Years : Rs. 500/-**

***Printed at :***
**Mudrashilpa Offset Printers,**
**Laxmi Nagar, Nagpur**
***Type setting :***
**Lipi Systems**
Dhantoli, Nagpur.
M.: 9921624855


***May Sai's Blessings Enlighten you.***

## CONTENTS / अंतरंग

### हिन्दी विभाग


| | | |
|---|---|---|
| अमृत सन्देश (Divine Nectar) | ... | 1 |
| श्री साईं महिमा | ... | 2 |
| समर्पण | ... | 3-7 |
| **श्री गुरु चरित्र** | ... | 7-14 |
| आनंद का पथ | ... | 15-20 |
| सृी महाकाली महिमा | ... | 21 |
| माँ | ... | 22 |
| सत्मार्ग | ... | 23-24 |
| गुरुदया | ... | 25-27 |
| श्री शिव महिमा | ... | 28 |
| शब्द ब्रह्म | ... | 29-31 |
| विश्वास | ... | 32 |
| गुरु तत्त्व | ... | 33-34 |
| मार्गदर्शन | ... | 35-36 |
| परदु:ख | ... | 37-38 |
| जनवरी से अप्रैल २०१६ महत्वपूर्ण पर्व... | | 48 |


### English Section


| | | |
|---|---|---|
| Path Eternal | ... | 39-40 |
| Glory of Rama Nama | ... | 41-42 |
| Your Own Page | ... | 43-48 |


**– प्रार्थना की अथाह शक्ति –**

**गद्गद् होकर हृदय रोवै नीर बहाएँ नयन ।**
**मस्तक झुका रहे चरणन् में साईं कर सकें न सहन ।।**

चाहते हो कि कर्मफल दाता साईं हमारे दु:ख तकलीफ सहन न कर सकें, तो भरे मन से साईं चरण-कमलों में पुकार रखो। परम् दयालु दाता अवश्य सुनेंगे। ***''ॐ श्री साईं''***


**The editor does not accept responsibility for views expressed in articles published.**